श्रीनाट्यम्

(The Group of Sanskrit Drama)

वीणापाणि संस्कृत समिति, भोपाल

की प्रस्तुति

षोडश-संस्कारम् - नाटकम्

(सोलह संस्कार नाटक)

नाट्यसार

यह नाटक मानव जीवन के सोलह संस्कारों पर आधारित है। सोलह संस्कार इस प्रकार हैं-

1. गर्भाधान	2. पुंसवन	3. सीमन्तोन्नयन
4. जातकर्म	5. नामकरण	6. निष्क्रमण
7. अन्नप्राशन	8. मुण्डन	9. कर्णवेध
10. अक्षरारम्भ	11. उपनयन	12.वेदारम्भ
13. केशान्त	14. समावर्तन	15. विवाह
16.अन्त्येष्टि		

इन सोलह संस्कारों से मनुष्य मात्र का जीवन या चरित्र संस्कारित होता है। गर्भाधान से जन्म, जन्म से मरण फिर पुनर्जन्म का चक्र चलता रहता है।

इस नाटक में सोलह संस्कारों की जानकारी गुरु शिष्य के कथोपकथन के माध्यम से दी गई है। साथ ही इन आचारों की प्रक्रिया को समझाया गया है। जैसे गर्भधान, गर्भ में पञ्च तत्त्वों से शरीर का निर्माण-दृश्य आधुनिक उपकरणों से दर्शक को दिखाया गया है। इस प्रकार क्रमशः 16 संस्कारों को सरल सुगम सुबोध रीति से जन-मानस तक पहुँचाया गया है।

इस संस्कार दृश्य को रोचक एवं आत्मसात् करने के लिए प्रदेश के विभिन्न लोक गीतों का समावेश किया गया है। जैसे – बुन्देली, भोजपुरी, पंजाबी, हरियाणवी, बघेली लोक धूनों से गाया जाता है। साथ ही संस्कृत के मन्त्र उपनिषद् वाक्यों का भी प्रयोग किया गया है।

अस्तु, श्रीनाट्यम् (The Group of Sanskrit Drama) का प्रयास है कि, नाटक के जरिए जनता सरलता से, अनायास से संस्कृत, संस्कार, भारतीयता एवम् आध्यात्मिकता को जाने और समझे।

!!! इति शम् !!!

श्रीनाट्यम्

(The Group of Sanskrit Drama)

वीणापाणि संस्कृत समिति, भोपाल

की प्रस्तुति

षोडशसंस्कारं नाटकम्

नाट्यसारः

नाटकमिदं मानवजीवनस्य षोडष संस्कारान् आधारीकृत्य प्रवर्तते। सन्ति चेमे षोडश संस्काराः–

1. गर्भाधानम्	2. पुंसवनम्	3. सीमन्तोन्नयनम्
4. जातकर्म	5. नामकरणम्	6. निष्क्रमणम्
7. अन्नप्राशनम्	8. मुण्डनम्	9. कर्णवेधः
10. अक्षरारम्भः	11. उपनयनम्	12.वेदारम्भः
13. केशान्तः	14. समावर्तनम्	15. विवाहः
16.अन्त्येष्टिः		

एतैरेव षोडश संस्कारैः मानवमात्रस्यं जीवनं चरित्रं वा संस्कारितं भवति।गर्भाद् जन्म, जन्मतः मरणं पुनरपि जननम् इति चक्रम् चलति शाश्वतम्।

अस्मिन् नाटके षोडश संस्काराणां परिचयः गुरु-शिष्याणां कथोपकथनेन प्रदीयते।एतेषां संस्काराणाम् आचाराणां वा प्रक्रिया अपि संबोधिता। तथा हि – गर्भधानम्, गर्भे पञ्च तत्त्वानां सम्मिश्रणेन शरीरस्य निर्माणं जायते इति दृश्यम् आधुनिकोपकरणैः दर्शकाय संरचितम्। अनेन प्रकारेण क्रमशः षोडश संस्काराः सरल-सुगम-सुबोध-रीत्या जनमानसं संप्रापिताः।

अत्र प्रादेशिक-लोकगीतानां समावेशेन सर्वमपि संस्कारदृश्यं रुचिकरं कृतं विद्यते। तानि च गीतानि भोजपुरी, अवधी, पंजाबी, हरियाणवी इत्यादिषु लोकरागैः प्रस्तुतानि।अपि च मन्त्राणाम् उपनिषद्-वाक्यानां च प्रयोगो विहितः।

अस्तु, श्रीनाट्यस्य संप्रयासो यद्, नाटकमाध्यमेन जनसमूहः सरलतया अनायासेन संस्कृतं संस्कारं भारतीयताम् आध्यात्मिकतां वेति जानीयाद् अवबोधेच्च।

!!! इति दिक् !!!

श्रीनाट्यम् (The Group of Sanskrit)
वीणापाणि संस्कृत समिति, भोपाल
की प्रस्तुति

सोलह संस्कार

निर्देशकीय/लेखकीय

षोडश-संस्कारम् (सोलह संस्कार) नाटक श्रीनाट्यम् (The Group of Sanskrit Drama), वीणापाणि संस्कृत समिति, भोपाल की सफल प्रस्तुति है। 16 जुलाई 2016 से 16 अगस्त 2016 तक एक मास में नाट्याभ्यास कर यह नाटक मंचन हेतु प्रस्तुत किया गया है। हर्ष की बात है कि एक वर्ष की भीतर सम्पूर्ण भारत में इस नाटक की 15 प्रस्तुतियाँ विविध समारोह, नाट्योत्सव, चर्चित रंगमंच पर हुई हैं। इस नाटक की ख्याति विविध समाचार पत्रों में प्रकाशित हुई है, साथ ही दूरदर्शन चैनल, संस्कृत वार्तावली आदि में इस का प्रसारण किया गया। इस की लोकप्रियता को देखते हुए सम्प्रति सोलह संस्कार नाटक का प्रकाशन किया जा रहा है। क्योंकि,

भारतीय संस्कृति विश्व में श्रेष्ठ है, भारत विश्वगुरु है इस के पीछे हमारे सोलह संस्कार जैसी जीवन विकास प्रक्रिया है, जिस के कारण ही हमारी गरिमा अग्रगण्य है। जन्म से मृत्यु पर्यन्त मनुष्य को संस्कारित करने की प्रक्रिया हमारे ही देश में थी, हमारे ऋषि मुनियों ने ऐसी दिव्य दृष्टि का साक्षात्कार किया था जो आज भी पूर्णतः वैज्ञानिक एवं प्रासंगिक है।

गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि व पुनर्जन्म तक षोडश संस्कारों के चक्र को नाट्य-माध्यम से दिखाया गया है, जिसमें संस्कारों की लोकपरम्पराएँ, भारत के विभिन्न क्षेत्रों में परिव्याप्त लोकरीतियाँ, लोकगीतों के साथ-साथ नाट्यधर्मी तत्त्वों और आधुनिक रंगमंच की तकनीकी का अद्भुत समागम नाटक में परिलक्षित है।

वर्तमान समाज में इन सोलह संस्कारों में से जन्म, नामकरण, अन्यप्राशन, उपनयन (जनेऊ) विवाह मृत्यु आदि कुछ एक संस्कार कहीं कहीं प्रचलित है। प्रायः ये सोहल संस्कार विलुप्त होते जा रहे हैं। इस नाटक के माध्यम से मनुष्य को या समाज को इन संस्कारों की आवश्यकता और वैज्ञानिकता को बताया गया है - जो भारत की आत्मा है। संस्कारित जीवन शैली से ही भारत, भारत है।

अनादि काल से विकसित सोलह संस्कारों की सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और वैज्ञानिक परम्परा को प्रस्तुत नाटक से माध्यम से जन-सामान्य सरल और सहज रूप से समझ कर लाभान्वित होंगे।

वीणापाणि संस्कृत समिति, भोपाल

की प्रस्तुति

सोलह संस्कार

निर्देशकीयम्/लेखकीयम्

षोडश-संस्कारं नाटकं श्रीनाट्यम् (The Group of Sanskrit Drama), भोपालस्थ-वीणापाणि-संस्कृत-समितेः सुप्रसिद्धा नाट्यप्रस्तुतिः। 16 जुलाईतः 16 अगस्त 2016 एकेन मासेन मंचनाय सिद्धं नाटकमिदम्। अयं हर्षस्य विषयो, एकस्मिन्नेव वर्षे भारते नाटकस्य पञ्चदशाधिकं मञ्चनं विविधेषु समारोहेषु, नाट्योत्सवेषु प्रख्यातेषु रङ्गमञ्चेषु संजातम्। नाटकस्यास्य ख्यातिः नानाविधेषु समाचारपत्रेषु प्रकाशिता, दूरदर्शन-प्रणालिषु संस्कृत-वार्तावली-पत्रिकासु प्रसारिता च जाता। अस्य नाट्यस्य लोकप्रियतां दर्शं दर्शं सम्प्रति षोडश-संस्कारं नाटकं प्रकाश्यते। यतो हि -

भारतीया संस्कृतिः इहलोके अन्यतमा। भारतं विश्वगुरुः। तत्र च कारणं षोडष-संस्कारैः युक्ता जीवनविकासस्य प्रक्रिया। यस्माद् अस्माकं भारतीयानां गरिमा अग्रगण्यः। जन्मनः मृत्युं यावत् मनुष्यमात्रस्य संस्कारप्रक्रिया अस्माकमेव भारतदेशे आसीत् अस्ति च। अस्माकं पूर्वजाः मुनयः ऋषयः एतादृश-संस्स्कारसम्पन्नायाः दिव्यदृष्टेः साक्षात्कारं कृतवन्तः। यः अद्यापि पूर्णतः वैज्ञानिकः प्रासंगिकश्च वर्तते।

गर्भाधानाद् आरभ्य अन्त्येष्टिं यावत् पुनः पुनर्जन्म एवं षोडष संस्काराणां चक्रम् अत्र नाट्येन प्रदर्शितम्। संस्कारणां लोकपरम्पराः भारतस्य विभिन्नेषु क्षेत्रेषु विद्यमानाः लोकरीतयः, परिव्याप्तानि लोकगीतानि एतैः लोकधर्मीतत्त्वैः सह नाट्यधर्मी-तत्त्वानाम् आधुनिक-रंगमंच-कौशलानाम् सारस्वतः समागमः नाट्येऽस्मिन् दृश्यते।

सम्प्रति समाजे एतेषु षोडश-संस्कारेषु जन्म-नामकरण-उपनयन-विवाह-मृत्यु-प्रभृतयो द्वित्रा पञ्चषा वा संस्काराः क्वचित् कुत्रचित् प्रचलन्ति। प्रायः इमे षोडश संस्काराः विलुप्तप्रायाः दृश्यन्ते। अनेन नाट्येन मानवमात्रं समाजं प्रति वा एतेषां संस्काराणाम् आवश्यकता वैज्ञानिकता प्रासंगिकता च प्रदर्शिताः, ता एव भारतस्य आत्मास्थानीयाः। संस्कारित-जीवन-शैल्या हि भारतं भारतं राजते।

अनादिकालतः विकसितनां षोडष संस्कारणां सामाजिक-सांस्कृतिक-आध्यात्मिक-वैज्ञानिक-परिपुष्टिं प्रस्तुतेन नाट्येन सामाजिकाः दर्शकाः सुगमतया अवगम्य लाभान्विताः अवश्यम् भवेयुरिति।

आलेख

षोडश संस्कार

उपक्रम

संस्कार शब्द का अर्थ है – किसी वृत्ति, स्थिति, व्यक्ति, संस्था या व्यवस्था आदि की रचना और स्वरूप में पहले की अपेक्षा और अधिक परिष्कार। दूसरे शब्दों में दोषयुक्त वस्तु को दोष-रहित कर देना, कमी पूरी कर देना, उसमें अतिशय का आधान कर देना ही संस्कार कर्म है।

वैदिक-संस्कृति में सोलह संस्कारों का विधान है, इसका अभिप्राय यह है कि भारतीय-जीवन-पद्धति में सोलह बार मानव को बदलने का अर्थात् उसके नव निर्माण का प्रयास किया जाता है। जिस प्रकार स्वर्णकार अशुद्ध स्वर्ण को अग्नि में डालकर उसका संस्कार करता है, उसी प्रकार बालक के उत्पन्न होते ही उसे संस्कारों की भट्टी में डालकर व उसके दोषों को हटाकर उसमें सद्गुणों के आधान (समावेश) के निमित्त जो प्रयत्न किया जाता है, उसे वैदिक विचारधारा में 'संस्कार' शब्द से अभिहित किया गया है। महर्षि चरक की उक्ति है- **संस्कारो हि गुणान्तराधानमुच्यते** । अर्थात् मानव में पहिले से विद्यमान दुर्गुणों की निकालकर उनके स्थान पर सद्गुणों का आधान कर दने के नाम 'संस्कार' है।

इस प्रकार वस्तुत 'संस्कार' मानव जीवन के नव-निर्माण की एक सुन्दर योजना है। संस्कार मानव-जीवन के नव-निर्माण की योजना है। वस्तुतः यह एक आध्यात्मिक योजना है। हम देखते हैं कि कोई भी विकासाकाँक्षी देश योजनाओं की शृंखला का अवलम्बन लेकर आगे बढ़ने का प्रयत्न करता है। सच्चे मानव का निर्माण करने के लिए आध्यात्मिक योजना का अवलम्बन लेना अनिवार्य है, और उसी योजना का विधान वैदिक विचारधारा में 'संस्कार' नाम से किया गया है, तथा वह भारतीय-जीवन पद्धति का एक अपरिहार्य अथवा सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग है। निष्कर्षतः वैदिक-संस्कृति की सबसे बड़ी योजना और उस योजना का केन्द्र बिन्दु संस्कारों द्वारा मानव का नव-निर्माण है।

पृष्ठभूमि

भगवतगीता की "नहि कश्चित् क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्" इस उक्ति के अनुसार कोई प्राणी क्षणमात्र के लिए भी बिना कर्म किये नहीं रह सकता। कायिक, वाचिक अथवा मानसिक रूप से उसे प्रकृतिज गुणों के परवश होकर कोई न कोई कर्म करना ही पड़ता है, और प्रत्येक कर्म अपना एक अदृष्ट, अपनी एक रेखा, अपना एक संस्कार मस्तिष्क-पटल को छोड़ता चला जाता है। अखिल विश्व का नियन्त्रण कार्यकारण भाव के नियम से हो रहा है। कोई भी कार्य बिना कारण के नहीं हो सकता "कारणं बिना कार्याभावः" और प्रत्येक कारण का कार्य भी अवश्यमेव होगा, जिसे हम आज 'कारण' कहते हैं, वह पिछले जन्म का 'कार्य' होता है और जिसे हम आज 'कार्य' कहते हैं, वह अगले जन्म का 'कारण' बन सकता है, इस प्रकार कार्य-कारणभाव की व्यवस्था के अधीन कर्मों की शृंखला बनती चली जाता है, इसी कर्म शृंखला का सूक्ष्म रूप 'संस्कार' कहलाता है, इस शृंखला में माता-पिता के 'संस्कार' भी रक्तसम्बन्ध के प्रभाव से मिल जाते हैं, और उपर्युक्त शुभ-अशुभ, सत्-असत् या अच्छे बुरे कर्मजन्य संस्कारों के

अनुसार मानव जीवन की प्रवृत्तियाँ भी (जिन्हें नियति भी कहा जाता है) शुभ-अशुभ सत्-असत् या अच्छी-बुरी बनती रहती हैं।

वैदिक-संस्कृति का कथन है कि आत्मा के इस 'सूक्ष्म-शरीर' या 'कारण शरीर' में अर्थात् संस्कारों के शरीर में जन्मधारण करने के बाद तो संस्कार आते ही हैं, जन्म लेने से पहले भी, जब वह माता के गर्भ में होता है,तब भी नवीन संस्कार डाले जा सकते हैं। 'सूक्ष्म शरीर' या 'कारण शरीर' में 'नये संस्कारों का पड़ जाना' ही संस्कारों की पद्धति का रहस्य है। नये संस्कारों द्वारा ही पुराने संस्कारों को बदला जा सकता है। तब आत्मा के एक-एक कर्म की समीक्षा की आवश्यकता नहीं रह जाती हैं, क्योंकि जन्म-जन्मान्तर के कर्मों का निचोड़ ही तो 'संस्कार' है। 'संस्कार' में एक कर्म नहीं, प्रत्युत अनेकानेक- कर्मों का सम्मिश्रण रहता है उसके भोग से ही समस्त कर्मों का भोग हो जाता है। वृक्ष की शाखाओं तक रस पहुंचाने के लिए एक-एक शाखा (टहनी) में रस डालने की आवश्यकता नहीं रहती, उसके मूल में रस डालने से प्रत्येक शाखा, प्रत्येक पत्ते में रस पहुंच जाता है।

इस प्रकार कर्मों की जटिल समस्या का समाधान वैदिक-संस्कृति ने संस्कारों द्वारा निकालने का सराहनीय प्रयत्न किया है और मानव के नव-निर्माण के विचार को जन्म दिया। अतएवं वैदिक संस्कृति के सोलह संस्कार मानव के नव-निर्माण का समुज्जवल प्रयास है।

संस्कार आत्मा के जन्म धारण करने के पूर्व से ही प्रारम्भ हो जाते हैं। कुछ जन्म ग्रहण करने के पश्चात् किये जाते हैं। जन्म ग्रहण से पूर्व जिन संस्कारों का विधान किया गया है, उनमें सबसे प्रथम संस्कार 'गर्भधान' संस्कार है, वह संस्कार, जिसे आज का जड़वादी जगत् विषय-तृप्ति का साधन मात्र समझता है। इस संस्कार को वैदिक-संस्कृति नवीन आत्मा के आवाहन का पविक्ष यज्ञ मानती है।

संस्कारों की संख्या

विभिन्न आचार्यों ने विभिन्न संख्याओं में भी संस्कारों को परिगणित किया है, अधोलिखित विवरण से विदित होगा कि किस-किस आचार्य ने कौन-कौन से संस्कार माने हैं-

1. **आश्वलायन गृह्यसूत्रम्** – 1. विवाह, 2. गर्भलम्भन, 3. पुंसवन, 4. सीमन्तोत्रयन, 5. जातकर्म, 6. नामकरण, 7. अन्नप्राशन, 8. चौल (चूडाकर्म), 9. उपनयन, 10. वेदारम्भ, 11. गोदान (केशन्त), 12. समावर्तन, 13. अन्त्येष्टि।
2. **कोषीतकि (शांखायन) गृह्यसूत्रम्-** 1. विवाह, 2. गर्भाधान, 3. पुंसवन, 4. गर्भरक्षण, 5. सीमन्तोन्नयन, 6. जातकर्म, 7. अन्नप्राशन, 8. चूडाकर्म, 9. गोदान, (केशान्त), 10. उपनयन, 11. वेदारम्भ, 12. समावर्तन।
3. **पास्करगृह्यसूत्रम् (कात्यायनपरिशिष्टसहितम्)-** 1. विवाह, 2. चतुर्थीकर्म (गर्भाधान), 3. पुंसवन, 4. सीमन्तोन्नयन, 5. जातकर्म, 6. नामकरण, 7. निष्क्रमण, 8. अन्नप्राशन, 9. चूडाकरण, 10. कर्णवेध, 11. उपनयन, 12. वेदारम्भ, 13. केशान्त, 14. समावर्तन।
4. **आपस्तम्ब –गृह्यसूत्रम्-** 1. विवाह, 2. ऋतुगमन, 3. पुंसवन, 4. सीमन्तोन्नयन, 5. जातकर्म, 6. नामकरण, 7. अन्नप्राशन, 8. चौल, 9. गोदान, 10. उपनयन, 11. वेदारम्भ, 12. समावर्तन।
5. **हिरण्यकेशिकगृह्यसूत्रम्-** 1. उपनयन, 2. वेदारम्भ, 3. समावर्तन, 4. विवाह, 5. चतुर्थीकर्म, 6. सीमन्तोन्नयन, 7. पुंसवन, 8. जातकर्म, 9. चूडाकर्म, 10. गोदान।

6. **मानवगृह्यसूत्रम्-** 1. विवाह, 2. गर्भधान, 3. सीमन्तोन्नय, 4. पुंसवन, 5. जातकर्म, 6. नामकरण, 7. निष्क्रमण, 8. अन्नप्राशन, 9. चूडाकर्म, 10. केशान्त, 11. उपनयन, 12. वेदारम्भ, 13. समावर्तन।
7. **गोभिलगृह्यसूत्रम्** – 1. विवाह, 2. गर्भाधान, 3. पुंसवन, 4. सीम्न्तकरण, 5. जातकर्म, 6. निष्क्रमण, 7. नामधेयकरण, 8. चूडाकर्म, 9. उपनयन, 10. वेदारम्भ, 11. गोदान, 12. समावर्तन।
8. **जैमिनीगृह्यसूत्रम्-** 1. विवाह, 2. गर्भाधान, 3. पुंसवन, 4. सीमन्तोनयन, 5. जातकर्म, 6. नामकर्म, 7. प्राशनकर्म, 8. चौलकर्म, 9. उपनयन, 10. गोदान, 11. समावर्तन।
9. **खादिरगृह्यसूत्रम्-** 1. विवाह, 2. गर्भाधान, 3. पुंसवन, 4. सीमन्तोन्नयन, 5. सोष्यन्ती होम (जातकर्म), 6. निष्क्रमण, 7. नामकरण, 8. चौल, 9. उपनयन, 10. वेदारम्भ, 11. गोदान।
10. **कौशिकसूत्रम्-** 1. विवाह, 2. चतुर्थीकर्म, 3. नामकरण, 4. अन्नप्राशन, 5. निर्णयन (निष्क्रमण), 6. गोदान, 7. चूडाकरण, 8. उपनयन, 9. वेदारम्भ, 10. पितृमेध (अन्त्येष्टि)।
11. **गोपथब्राह्मणम्-** 1. गर्भाधान, 2. पुंसवन, 3. सीमन्तोन्नयन, 4. जातकर्म, 5. नामकरण, 6. निष्क्रमण, 7. अन्नप्राशन, 8. गोदान, 9. चूडाकरण, 10. उपनयन, 11. आप्लावन (समावर्तन)।
12. **मनुस्मृति-** 1. गर्भाधान, 2. जातकर्म, 3. नामकरण, 4. निष्क्रमण, 5. अन्नप्राशन, 6. चूडाकर्म, 7. उपनयन, 8. केशआन्त, 9. वेदारम्भ, 10. समावर्तन, 11. विवाह, 12. वानप्रस्थ, 13. संन्यास, 14. अन्त्येष्टि।

विषय प्रवेश

यद्यपि उपर्युत संक्षिप्त विवेचन के अनुसार संस्कारों की संख्या 14 से अधिक नहीं है। तथापि गहन-सात्त्विक-चिन्तन के फलस्वरूप आचार्यों द्वारा हिन्दू-जीवन-पद्धति में षोडश (सोलह) संस्कार प्रवर्तित हुए, जिनकी नाम तालिका निम्नलिखित प्रकार से हैः-

1. गर्भाधानम्,	2. पुंसवनम्,	3. सीमन्तोन्नयनम्,	4. जातकर्म संस्कार,
5. नामकरणम्,	6. निष्क्रमण संस्कारः,	7. अन्नप्राशन संस्कारः,	8. चूडाकर्म संस्कारः,
9. कर्णवेध संस्कार,	10. उपनयन संस्कारः,	11. वेदारम्भ संस्कारः,	12. समावर्तनसंस्कार
13. विवाह संस्कारः,	14. वानप्रस्थाश्रम संस्कार,	15. संन्यासाश्रम संस्कार,	16.अन्त्येष्टि कर्म

उपर्युक्त सोलह संस्कार अत्यन्त प्राचीनकाल से हमारे वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक एवम् राष्ट्रीय जीवन की आधारशिला रहे हैं, और यह कथन अतिरञ्जित न होगा कि जब तक इन संस्कारों का विधान हमारे जीवन में चरितार्थ रहा, हमारा देश अपनी सांस्कृतिक गरिमा एवम् नैतिकता से उच्च आदर्शों से ओतप्रोत उत्कृष्टता के कारण जगद्गुरु के महनीय सिंहासन को अलंकृत करता रहा, किन्तु कालक्रम से ज्योंही इन संस्कारों का ढाँचा चरमराने लगा, त्योंही वह पतनोन्मुख होता दिखायी देने लगा है।

संस्कार परिचय

इन संस्कारों का संक्षिप्त स्वरूप परिचय निम्नलिखित प्रकार से हैः-

1. **गर्भाधानः** विवाह के पश्चात् सन्तान प्राप्ति के लिए गर्भाधान संस्कार का विधान है। यह एक प्रकार का वैवाहिक यज्ञ है। यह गर्भाधान से पूर्व ऋतुकाल होने से उसके चौथे दिन विधिपूर्वक किया जाता है। यज्ञ-

समाप्ति पर पति-पत्नि के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता है- "धाता गर्भदधातु ते" अर्थात्- विधाता तुम्हारे गर्भ की रक्षा करे अथवा परमेश्वर तुम्हें गर्भधारण के योग्य बनावे।

2. **पुंसवनः-** यह संस्कार पुत्र प्राप्ति की इच्छा का द्योतक है। गर्भाधान (गर्भ स्थिति) के तृतीय या चतुर्थमास में इसके सम्पादन का विधान है। यह संस्कार पुत्र प्राप्ति के विशेष उद्देश्य से किया जाता है।
3. **सीमन्तोन्नयनः-** यह संस्कार माता के गर्भधारण की सूचना देता है। यह केवल प्रथम बार गर्भधारण के समय ही किया जाता है- ऐसा कुछ विद्वानों का मत है "सीमन्तोन्नयन" का शाब्दिक अर्थ है-केशों का श्रृंगार करना। यह प्रायः गर्भावस्था के पाँचवे मास में होता है। इस अवसर पर पत्नी को गूलर की माला धारण कराने का विधान है।
4. **जातकर्मः** बालक के जन्म के पश्चात् उसकी रक्षार्थ यह संस्कार किया जाता है। इसमें यज्ञ के समय पिता बालक के स्वास्थ्य के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता है। शिशु को स्नान कराया जाता है और उसे मधु, घृत तथा माता का दुग्ध पिलाया जाता है।
5. **नामकरणः** इस संस्कार का सम्बन्ध शिशु का नाम रखने से है। पुरोहित बालक की जन्मराशि के अनुसार उसका नाम-निर्धारण करता है। बालक का नाम दो या चार अक्षरों वाला होना चाहिए, इसी प्रकार कन्या का नाम तीन अक्षरों वाला होना चाहिए। वृक्ष, नदी, लता आदि के नामों पर कन्या का नाम नहीं रखना चाहिए, इस संस्कार में हवन आदि भी किया जाता है।
6. **निष्क्रमणः** इस संसार में शिशु को सूतिकागृह अथवा घर से बाहर निकाला जाता है दो-तीन मास में जब बालक वायु आदे के बाह्य प्रभाव को सह लेने योग्य हो जाता है, तब उसे बाहर ले जाते हैं, स्वास्थ्य –दृष्टि से इस संस्कार का बड़ा महत्त्व है। इसमें सूर्य-देवता से बालक की दृष्टि शक्ति को उत्तम बनाये रखने की प्रार्थना की जाती है।
7. **अन्न-प्राशनः** जन्म से छह मास के पश्चात् दाँत निकलते समय बच्चे को अन्न खिलाना प्रारम्भ इस संस्कार में किया जाता है। इसमें दही, मधु, घृत तथा भात बच्चे को चटाया जाता है। इस संस्कार का उद्देश्य बालक के दाँतों तथा पाचन क्रिया की देखभाल करना है। इस संस्कार के पश्चात् उसे थोड़ा-थोड़ा अन्न देना प्रारम्भ किया जाता है।
8. **चूडाकर्मः** इसमें बालक के केशों को काटने तथा शिखा मात्र (केवल चोटी) रखने का विधान है। आजकल इसे मुण्डन-संस्कार कहते हैं। इसका सम्बन्ध बालक के मस्तिष्क विकास से है। चोटी रखने का विधान वैज्ञानिक महत्त्व का है। बाल काटने के पश्चात् बालक के मस्तक पर नवनीतलेपन अर्थात मक्खन लगाने व तदनन्तर स्नान कराने का विधान है। इसमें पहले यज्ञ होता है, तदनन्तर बाल काटे जाते हैं। इसका समय जन्म से प्रथम अथवा तृतीय वर्ष है। कटे हुए बालों को गोबर में रखकर उन्हें किसी नदी या तालाब में छोड़ दिया जाता है।
9. **कर्ण वेधः** इसका सम्पादन जन्म से तीसरे या पाँचवें वर्ष में किया जाता है। इसमें किसी योग्य पुरुष द्वारा बालक के कान व नाक छिदाये जाते हैं। धातु की शलाका या बाली उन छेदों में पहिनाई जाती है।
10. **उपनयनः** यह संस्कार अत्यन्त महत्त्वपूर्ण माना जाता है। इसका सम्बन्ध बालक की शिक्षा –दीक्षा से है। बालक की 8 से 24 वर्ष तक की आयु के मध्य किसी भी समय पिता उसे किसी योग्य शिक्षक के पास ले

जाता है। इस समय बालक को यज्ञोपवीत धारण कराया जाता है। बालक के चारित्रिक उत्थान का दायित्व अब से माता-पिता के स्थान पर शिक्षक या आचार्य पर आ पड़ता है। इस संस्कार से बालक का दूसरा जन्म माना जाता है। इसी कारण उसे "द्विज" संज्ञा दी जाती है। "द्विज" बनने के बाद गुरु बालक से गायत्रीमंत्र का तीन बार उच्चारण कराकर उपदेश करता है। यह गायत्री मंत्र इस प्रकार है- "**ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहिधियो योन प्रचोदयात्**" इस संस्कार के पश्चात् बालक ब्रह्मचर्यव्रत धारण करके वेदाध्ययन का अधिकारी हो जाता है।

11. **वेदारम्भः** वेद पढ़ने का उपक्रम करने से पूर्व जो धार्मिक क्रिया की जाती है, उसे 'वेदारम्भ-संस्कार' कहा जाता है। इस संस्कार द्वारा बालक चारों वेदों के साङ्गोपाङ्ग अध्ययन के निमित्त नियम धारण करता है। प्रातः काल शुभमुहूर्त में आचार्य बालक के वेदमंत्रों का अध्ययन प्रारम्भ कराता है। यह संस्कार या तो "उपनयन" के साथ ही सम्पन्न कराया जाता है, अथवा उसके बाद एक वर्ष के भीतर गुरु-कुल में सम्पन्न कराया जाता है।
12. **समावर्तनः** यह संस्कार बालक की शिक्षा समाप्ति पर सम्पन्न होता है। इसमें बालक को गुरुकुल (विद्यालय) से घर जाने की अनुमति दी जाती है इस समय आचार्य बालक को एक महत्त्वपूर्ण उपदेश देता है, जिसमें सत्य, धर्म, स्वास्थ्य आदि से प्रमाद न करने की बात कही जाती है। इसमें आचार्य उस स्नातक को विवाह करके सन्तानोत्पत्ति करने की आज्ञा भी देता है।
13. **विवाह (गृहस्थाश्रम)** –शिक्षा समाप्त करके गृहस्थाश्रम में प्रवेश लेने के लिए यह संस्कार किया जाता है। इसमें युवा स्नातक का कुलशीलवती, गुणसम्पन्ना कन्या के साथ विवाह किया जाता है भारतीय (हिन्दु) पद्धति से वर जीवनपर्यन्त कन्या का हाथ थामता है, इसी कारण इस संस्कार को "पाणिग्रहण संस्कार" कहा जाता है।

विवाह को हिन्दू संस्कारों में इतना महत्त्व दिया गया है कि बिना पत्नी के पुरुष अकेला कोई धार्मिक कर्म करने का अधिकारी नहीं माना जाता।

इस विवाह संस्कार के बाद मनुष्य गृहस्थाश्रम में प्रवेश लेता है और विधिवत यज्ञ आदि करके अपने जीवन को उत्तम बनाता जाता है। इस समय वह अपनी पत्नी के साथ विविध सांसारिक सुखों को भोगता है और शास्त्रानुकूल धर्म का आचरण करता है।

14. **वानप्रस्थाश्रमः** यह संस्कार पुत्र के पुत्र हो जाने पर किया जाता है। इसका समय पचास वर्ष की आयु के पश्चात् होता है।
15. **संन्यासाश्रमः** यह संस्कार 76 वर्ष की आयु के पश्चात् किया जाता है अथवा जब वैराग्य हो जावे तभी यह संस्कार कर दिया जाता है। इसमें व्यक्ति संसार में कल्याणार्थ संन्यास ग्रहण करता है।
16. **अन्त्येष्टिः** यह मनुष्य की मृत्यु के अन्तर उसके शरीर के साथ सम्बन्ध रखता है। 'भस्मान्तं शरीरम्' इस वेदवाक्य के अनुसार चिता बनाकर निष्प्राण देह को उस पर रखते हैं, और अग्नि प्रज्वलित करके यह संस्कार कर देते हैं।

विषय विमर्श

आज हम देखते हैं कि मानव का वैयाक्तिक जीवन अशान्त, सामाजिक जीवन विग्रहपूर्ण और राष्ट्रीय जीवन पतनोन्मुख सा बना हुआ है चारों ओर से इस दशा में सुधार का स्वर भी मुखरित होता है, किन्तु सुष्ठु निदान के अभाव में व्याधि का उपचार सम्भव नहीं हो सकता। सच पूछा जाय तो इस समग्र अशान्ति, विग्रह एवम् अनाचार का कारण है, मानव की असंस्कृतता अर्थात् संस्कार-हीनता। यदि हमारी सांस्कृतिक-चेतना को पुनः उत्स्फूर्त करने की दिशा में ठोर प्रयत्न किये जाय और मानव-मानव को संस्कार सम्पन्न बनाने का यथेष्ट प्रयास किया जाय तो इस सम्पूर्ण समस्या का स्वतः ही समाधान हो सकता है।

धर्मशास्त्र की दृष्टि से जैमिनी पहले आचार्य हैं जिन्होंने 'संस्कार' शब्द को की बार प्रयुक्त किया। जैमिनी प्रणीत सूत्रों पर भाष्य लिखने वाले शबर स्वामी '**संस्कारों स भवति यस्मिन् जाते पदार्थो भवति योग्यः कस्यचिद्द्रथस्य**' इन शब्दों में संस्कार को वस्तु से योग्यता के निर्माम का साधन मानते हैं। तंत्र वार्तिक के रचयिता कुमारिल भट्ट ने '**द्विप्रकारा योग्यता**' कह कर किसी भी वस्तु या पदार्थ में '**दोषापनयन**' (दोषों का निवारण) तथा 'गुणान्तरोपजनन' (नवीन गुणों से समन्वित करना) को संस्कारों का उद्देश्य माना। स्पष्ट है कि 'दोषापनयन' नकारात्मक है और 'गुणान्तरोपजनन' सकारात्मक। खान से प्राप्त होने वाले रत्नों एवं हीरों पर भी संस्कार करके उनके मूल्य में वृद्धि होती है। उन्हें ज्यों-का-त्यों नहीं रखा जाता, इससे जौहरी भली भाँति परिचित हैं। जो बात रत्नों एवं हीरों के सम्बन्ध में सही है वही मनुष्यों पर लागू करके प्राचीन मनीषियों ने संस्कारों के माध्यम से मनुष्य के तन के साथ-साथ मन को प्रसन्न एवं पवित्र रुप प्रदान करने पर जोर दिया था। मनुष्य को सामाजिक जीवन में उपादेय कराने की उनकी अभिलाषा रही।

संस्कारों की प्रक्रिया को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है। एक उसका वैज्ञानिक स्वरूप-जो मंत्रोच्चारण, यज्ञानुष्ठान आदि कर्मकाण्डों के रुप में प्रयुक्त होता है तथा दूसरा जो मंत्रों की व्याख्या तथा विधिविधानों के रहस्योद्घाटन के रुप में प्रस्तुत किया जाता है। संस्कारों में प्रयुक्त होने वाली कर्मकाण्ड प्रक्रिया का प्रत्येक रंग अपने आप में रहस्यपूर्ण है। उसमें बड़ा महत्व एवं मर्म छिपा पड़ा है। सुसंस्कृत संस्कृति की आवश्यकता सर्वत्र अनुभव की जा रही है। इटली के मेंडले नामक विद्वान ने संस्कार शास्त्र पर आधारित शास्त्र की नींव डाली, जिसे 'यूजेनिक्स' कहा गया। इंग्लैड के विद्वान 'सर फ्रानिक्स गाल्टन' ने अपनी सम्पति का बड़ा भाग लंदन विश्वविद्यालय को इस क्षेत्र में शोध के लिए दिया। इस क्षेत्र में शोध कर रहे विद्वानों का कहना है कि सन्तति को सुसंस्कारी एवं शालीन बनाने में प्रत्यक्ष उपदेशों, प्रशिक्षणों का कम, धार्मिक संस्कारों का अधिक योगदान होता है।

प्रसिद्ध लोकोक्ति है- 'धन चला गया, कुछ नहीं गया। स्वास्थ्य चला गया, कुछ चला गया। चरित्र चला गया तो समझो सब कुछ चला गया।' जीवन की बहुमूल्य विशिष्टता, सम्पदा, चरित्र निर्माण का आधार संस्कार है। मनोविज्ञानी फ्रांसिस मेरिल के ग्रन्थ 'द सीक्रेट सेल्फ' के अनुसार जिस प्रकार के संस्कारों का संचय हम करते हैं, उसी के अनुरूप चरित्र बनता-ढलता चला जाता है।

आज सब ओर भौतिकवाद की ध्वनि सुनाई दे रही है। पाश्चात्य दृष्टिकोण को अपनाकर हमने अपने धार्मिक विचारों को खो दिया है। धर्म, रीतिरिवाज, व्रत, त्योहार, संस्कार, साधना, यज्ञ आदि पर हमारी आस्था कम हो रही है। हम इसका उपहास करते हैं। यही कारण है कि हम दुःखी रहते हैं। हमारे धर्म की प्रत्येक प्रक्रिया में अवश्य कुछ रहस्य छिपा रहता है। यह अंधविश्वास पर आधारित नहीं है। यह बुद्धि और तर्क की कसौटी पर खरी उतरती है। हम इसे बाह्य

दृष्टि से देखते हैं, गहराई तक पहुँचने का प्रयत्न नहीं करते, इसलिए नासमझी के कारण ही इसकी उपेक्षा करते हैं। अब समय आ गया है कि हम इसको समझें और पुनः इसे जीवन विकास के लिए काम में लावें।

0-0-0

सहायक ग्रन्थ सूची

आपस्तम्भ गृह्यसूत्रम्, आश्वलायन गृह्यसूत्रम्, पारस्कर गृह्यसूत्रम्, मनुस्मृतिः, याज्ञवल्क्य स्मृतिः

सोलह संस्कार, स्व. प्रद्युम्न कुमार शास्त्री, राजस्थान पत्रिका प्रकाशन, जयपुर, 2001

संस्कारणां पर्यालोचनम्, डॉ. जयकृष्ण मिश्र, श्रीजगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी, 2005

संस्कार सौरभ, सं. हरीश, ज्ञान मन्दिर प्रकाशन, हरमाड़ा, किशन गढ, राजस्थान, 2002

वैदिक साहित्य और संस्कृति, बलदेव उपाध्याय, चौखम्भा, वाराणसी

भारतीय संस्कृति, श्री रामजी उपाध्याय, संस्कृत परिषद्, सागर, म.प्र.

0-0-0-0-0

- श्रीनाट्यम् (The Group of Sanskrit Drama)

वीणापाणि संस्कृत समिति, भौपाल

॥ श्रीः॥

नाटकम्

षोडष-संस्कारम्

(सोलह संस्कार)

हिन्दी रूपान्तर

नाट्यकारः

डा. धर्मेन्द्र कुमार सिंहदेव

निर्देशकः

श्री मनोज मिश्रः

प्रस्तुतिः

श्रीनाट्यम्

(The Group of Sanskrit Drama)

वीणापाणि-संस्कृत-समितिः

भोपालम्, मध्यप्रदेशः

सोलह संस्कार

अथ नान्दी

श्रीनाट्यं रचितं मुदे तव रमे! रङ्गस्थलीयं धरा
चन्द्रार्कावपि तत्प्रकाशनरौ रात्रिः पटाक्षेपिनी।
सोऽहं चास्य निदेशको ननु जगन् - मञ्चेऽपि तन्मञ्चितं
जीवैरित्यतिहर्षपूरितमनाः पायात् प्रभुः पावनः।।

[हे लक्ष्मी ! मैं ने इस जगत रूपी श्रीनाट्यम् की रचना आप की प्रसन्नता के लिए की है, इस श्रीनाट्यम् में यह पृथ्वी ही रंगस्थली है, सूर्य और चन्द्रमा इस रंगस्थली को नित्य प्रकाशित कर रहे हैं, रात्रि नाट्यान्तर के समय पटाक्षेप (पर्दा गिराना) में संलग्न है। मैं स्वयं इस का निर्देशक हूँ, फिर भी संसार के लोगों ने मेरे जगत् मंच पर नाट्य मंच बनाकर कई नाटकों का मंचन कर दिया" इस तरह हर्ष से पूर्ण मन वाले भगवान् विष्णु सब की रक्षा करें।।]

(ओंकार का उच्चारण करते हुये गुरु और झोले में लड्डू ढूंढते हुये दो शिष्यों का प्रवेश)

गुरु – (गुस्से में) ओम्.....

शिष्य – नमः शिवाय

गुरु – अरे दुष्टों ! सहृदय दर्शक आ गये हैं। प्रणाम करो।

शिष्य – (हाथों को उठाकर Hello करते हैं।)

गुरु - No Modernism, Proper Pranam

शिष्य – (साष्टाङ्ग प्रणाम करते हैं)

गुरु – अरे! संस्कृत नाटक है ये, नाट्यशास्त्रीय मुद्रा में अभिवादन करो।

शिष्य – (टेड़े मेड़े होकर प्रणाम करते हैं)

गुरु – (दोनों को मारते हुये) तुम जैसे धूर्तों के कारण ही भारतीय संस्कृति और सभ्यता का पतन होता जा रहा है।

शिष्य 1– क्या पतन हो गया ?

शिष्य 2– क्यों हो गया ?

शिष्य 1– हमनें क्या किया है ?

शिष्य 2– आप ऐसा क्यों कह रहे हैं ?

शिष्य – क्या...क्यों .....क्या ..... क्यों.....कैसे ?

गुरु – चुप हो जाओ, क्या...क्यों .....क्या ..... क्यों....., जिस दिन से तुम दोनों का भार ढो रहा हूँ उस दिन से मेरा जीवन कष्टप्रद हो गया है। पूरा दिन तुम्हारे व्यर्थ प्रश्नों के उत्तर देते देते परेशान हो गया हूँ।

(दोनों शिष्य रोने लगते हैं)

इसीलिए मैंने इसका नाम क्या और इसका क्यों रख दिया है। ओफ्फ..... मैं आप लोगों के सामने अपना दुखड़ा क्यों रो रहा हूँ ? I am sorry, No Personal talk, हम यहाँ नाटक करने के लिये आये हैं। तो हमारे भारतीय संस्कृति में सोलह संस्कार .....

शिष्य– सोलह संस्कार नहीं गुरुजी, सोलह शृंगार ...
इक चतुर नार कर के शृंगार ..।(नाचने लगते)

गुरु– अरे ..मूर्खों! तुमने कभी ये संस्कार शब्द सुना है ?

शिष्य – सुना है ना गुरुजी .. अन्तिम संस्कार।
'राम नाम सत्य है', 'राम नाम सत्य है'।

गुरु – ओहो .....शिव... शिव.. शिव... मंगलाचरण के समय इतना अमंगल.....आप ही बताइये महाशयों। मैं सोलह संस्कार यह नाटक आप लोगों को दिखलाऊँ या इन धूर्तों को संस्कार सिखाऊँ ?

शिष्य 1– आप क्या बोल रहे हैं ?

शिष्य 2– ऐसा क्यों बोल रहे हैं ?

शिष्य 1– आप क्या शुरु करने वाले हैं ?

शिष्य - क्या...क्यों,...क्या..क्यों....

गुरु – (दोनों का मुँह बन्द करते हुये) हाँ तो मैं यह बता रहा था कि, सोलह संस्कारों के अन्तर्गत प्रथम संस्कार है .. ''गर्भाधान संस्कार''

शिष्य – क्या क्या गरबा ...? (दोनों नाचने लगते हैं)

गुरु – अरे शिव.. शिव.. शिव मूर्खों! गरबा नहीं, गर्भ गर्भ (पेट बताते हुये)

शिष्य – अच्छा गर्भा।(गर्भवती का अभिनय करता है)

शिष्य 1– गर्भ क्या होता है गुरुजी ?

शिष्य 2– क्यों होता है गुरुजी ?

शिष्य 1– कैसे होता है गुरुजी ?

गुरु- (दोनों को बगल में दबाकर,मुँह बन्द करते हुये)

ओम्! गर्भाधान संस्कार। यह संस्कार सन्तानोत्पत्ति की कामना से होता है, शुभ मुहूर्त में देवों का पूजन करके दम्पत्ति रात्रि में सम्भोग करते हैं।

(स्त्री पुरुषों का समागम सुनकर दोनों शिष्य गुरु के पास बैठ जाते हैं)

शिष्य – गुरुजी हमारा भी गर्भाधान संस्कार कीजिये ना...

गुरु – अरे तुम दोनों का तो मैं अन्तिम संस्कार करूँगा। तो लीजिये प्रस्तुत है ''गर्भाधान संस्कार''।

(निकल जाते हैं)

1. गर्भाधान संस्कार

(दृश्य) (नेपथ्य- जल्दी करो.. जल्दी करो, नई बहू आ रही है, दौरा लाओ, पूजन की थाली लाओ। गाना बजाना शुरू करो।)

(गीत)

नाका चलना ओ बुचिआ नाका चलना कि
जैसे बँसवा नवेला ओईसे नाका चलना।
कैसे नोई ना सासुजी कैसे नोई ना
हमर पिताजी के पोसल देहिया नभ लोना जाय - - चाचाजी - -भैया जी - -
॥

(संकल्पादि, पञ्चतत्वों का समावेश दृश्य)

2. पुंसवन-संस्कार

(दृश्य)

(गुरु पुंसवन संस्कार का ..... श्लोक बोलते हुये तथा शिष्य का छींकते हुये प्रवेश)

गुरु– मूर्ख ! इस प्रकार का दुराचरण, क्या हो गया है तुम्हें?

शिष्य – गुरुजी वो पिछले संस्कार में वो..... जड़ी-बूटी.....

गुरु– अरे वत्स! वह तो पुंसवन संस्कार की औषधि आदि थी।

शिष्य– पुंसवन संस्कार यह क्या होता है गुरुजी ?

गुरुजी– अरे वत्स ! पुंसवन संस्कार गर्भाधान से तीसरे मास में होता है। जिसमें आयुर्वेद के ग्रन्थ सुश्रुत-संहिता के शारीरिकस्थान के अनुसार वटवृक्ष की जड़ के रस को नासिका में डालते हैं जिसे दाहिने नासिका में डालो तो पुत्र और बायें में डालो तो पुत्री होती है।

शिष्य– गुरुजी ..... मुझे बचाइये गुरुजी उसने दायें और मैनें बायें मे डाल लिया क्या बायें .....स्त्री, स्त्री .....बायें ..... ?

गुरु– धीरे बोलो।

शिष्य - गुरुजी क्या मैं स्त्री बन जाऊंगा ?

गुरुजी– अरे नहीं मूर्ख वो गर्भ में होता है।

शिष्य– क्या गर्भ वो मटका ..... ?

गुरुजी– हाँ वो मटका नहीं गर्भ था क्यूंकि ये नाटक है ना।

शिष्य– हा हा हा ..... मटके में गर्भ हा.....हा.....हा.....

गुरुजी– अरे चुप ...

शिष्य– तो वो क्या था वो शंख,पानी,धुआँ धुआँ धुआँ .....

गुरुजी– वो पञ्चततत्व है, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश. जिनसे इस शरीर का निर्माण होता है।

शिष्य– तो क्या मुझमें भी पञ्चततत्व है।

गुरुजी- शरीर का निर्माण तो पञ्चततत्वों से ही होता है, ईश्वर ही जाने, तुम मेंं कौन सा ततत्व है ? क्षमा करें। अगला संस्कार है सीमान्तोन्नयन संस्कार।

3. सीमन्तोन्नयन-संस्कार

शिष्य- छी.....मन्तोन्नयन...अब ये क्या है गुरुजी

गुरुजी- मूर्ख, सीमन्त मतलब होता है केश और उन्नयन का तात्पर्य होता है ऊपर उठाना।

शिष्य– क्या सीमन्त और क्यों उठाना गुरुजी ?

गुरुजी– अरे धूर्त्त, गर्भ से सातवें मास में गर्भस्थ शिशु के मस्तिष्क का विकास होता है।

शिष्य– तो क्या मेरे मस्तिष्क का भी विकास हुआ होगा

गुरुजी– शिव.. शिव.. शिव.. जब तुझमें मस्तिष्क ही नहीं तो विकास कहाँ ?

(पूजन की थाली लिये हुये स्त्रियों का प्रवेश)

[सीमान्तोन्नयन कर्मणि – श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः (फूल में सब लगाकर दे देता है) मांग (सीमन्त) विन्यास कीजिये, वेणी बन्धनं, (ओम्, वीरसूः त्वं भव, जीवसूः त्वं भव, जीवपत्नी त्वं भव) थाली में जल डालिये – अर्घ्य।]

नटी– पण्डितजी पूजन सम्पन्न हुआ, अब हम गोदभराई की रस्म करेंगे, जिसमें कोई पुरुष नहीं होना चाहिये।

(सारे पुरुष बाहर निकल जाते हैं)

(गीत)

बधाइयाँ बीबी तेनूं, बधाईया णी...
बधाइयाँ तेरे आर नूँ, परिवार नूँ
तेरे सोणे जे संसार नूँ
बधाइयाँ णी। . . . . .

4. जातकर्म संस्कार

(गीत)

जागे म्हारे भाग भयो रे म्हारे ललना,
इस ललने के दादा ने बुलाई दो
पढ़ा दो सारे बेद खँद्यादो गरुकुल में,

जागे म्हारे भाग भयो रे म्हारे ललना।।

(एक शिष्य स्त्री बन कर नृत्य करता है, पिता नवजात शिशु के कान में मन्त्र बोलते हैं)

पिता– (ऊँ भूस्त्वयि दधामि, ऊँ भुवस्त्वयि दधामि, स्वस्त्वयि दधामि, ओम् भूर्भुवः स्वः सर्वं त्वयि दधामि)

गुरु- बालक के मुख में ओंकार लिखने के लिये मधू लाइये। वत्स, मधु ले आओ।

शिष्य – मधू...अरी ओ मधू..।

गुरु– मधु नहीं शहद.. शहद मधु। (शिष्य को देखकर गुस्से से) क्यों रे ब्रह्मचारी..स्त्रियों के बीच घुसकर नाचता है। शिव..शिव..शिव.। मधु निकालो।

शिष्य – क्यों किया गुरजी ये ?

गुरु – स्वर्णशलाका द्वारा बालक की जिह्वा पर ओंकार लिखने से जातक का आध्यात्मिक विकास होता है। इस संस्कार का दूसरा नाम *मेधाजनन* संस्कार भी है। (बालक के मुख में ॐकार लिखते हैं)

गीत – जागे म्हारे भाग....

क्या– गुरु जी ..गुरुजी..।

क्यों– गुरुजी... गुरुजी, भूत... भूत

(स्त्रियाँ उपहास करती हैं)।

गुरु – भूत, कहाँ है भूत ?

क्यों - ये रहा गुरुजी।

(दोनों डरकर आँखे बन्द करते हैं, क्या आकर पैर पकड़ता है)

गुरु – (देख कर) अरे! क्या.... क्या हो गया वत्स ?

क्या – गुरुजी मैं मटका लेने गया था इन्होनें मुझे पकड़कर भ्रूण बना दिया।

(क्यों- हँसता है, उपहास उड़ाता है)

गुरु- ओ हो हो, बड़ा अन्याय हुआ, जा बच्चा स्नान आदि से निवृत्त हो कर आ।

क्या – आया गुरुजी।(जाता है)

5. नामकरण संस्कार

गुरु- (परिक्रमा लगा कर) अरे अरे! आज दस दिन हो गये नामकरण होना है और कोई साफ सफाई नहीं हुई, साफ–सफाई कीजिये।

क्यों – दस दिन.?

गुरु – अरे बच्चा! नाटक है यह। जाओ, नामकरण का प्रबन्ध देखो।

क्यों – गुरुजी ये नामकरण क्या होता है?

गुरु – नामकरण जन्म से ग्यारहवे दिन किया जाता है।

शिष्य – क्यों किया जाता है गुरुजी ?

गुरुजी – (विस्मय से सोचकर) क्योंकि, नाम से ही व्यक्ति की पहचान होती है।

शिष्य– गुरुजी यह पहचान ही अशान्ति का कारण है गुरुजी, नाम नहीं होता तो पहचान नहीं होती, पहचान नहीं होती तो जाति नहीं होती, जाति नहीं होती तो विवाद नहीं होता, सभी समान होते।

(गुरु के कन्धे पर हाथ रखते हुये)

आप और मैं सब बराबर होते।

गुरु– गुरु से बराबरी करेगा मूर्ख! सुनो –

नामाखिलस्य व्यवहारहेतुः शुभावहं कर्मसु भाग्यहेतुः।
नाम्नैव कीर्तिं लभते मनुष्यस्ततः प्रशस्तं खलु नामकर्म।।

और भी, समूह में पहचान के लिये नामकरण आवश्यक होता है। अच्छा ....ऐ मूर्ख ...क्यों ?

शिष्य – जी गुरुजी।

गुरुजी – देखा (हंसकर), पूजन प्रारंभ कर।

गुरु- श्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नमः।गणेशाम्बिकाभ्यां नमः।

शिष्य – (गुरुजी की नकल उतारते हुये) नमः।

गुरु - गुरुचरणकमलेभ्यो नमः, नामकरण संस्कार समये नान्दीश्राद्ध स्वस्तिपुण्याहवाचनं करिष्ये। शिष्य – करिष्ये..।

गुरु– बालक की कुण्डली बनाइये।

शिष्य– बनाईये।

गुरु– अरे मूर्ख ! जा तू कुण्डली निर्माण कर। लग्न भाव में गुरु स्थापित करें, दशम भाव में शनि को बैठाइये। (शिष्य उल्टा करता है) अरे मूर्ख वो मारकेश है हटा वहाँ से। (अश्विनी भरणी कृत्तिका रोहिणी मृगशिरा)। द्वितीय भाव में कुम्भ राशि के चन्द्र को स्थापित करें। बालक की बुआजी को बुलाइये।

(बुआ से गणना का अभिनय करते हुये)

जातक के नाम का आद्यक्षर है..... "स"।

(लोग नाम बोलते हैं- सैन्डी, सपोला, सम्पत, सर्फ एक्सल)

गुरु– अरे चुप ....., ये भी कोई नाम है, जातक का नाम देवता, मास, नक्षत्र एवं लोकव्यवहार के आधार से रखा जाता है।

बुआ– जानती हूँ पण्डितजी ये मेरा अधिकार है।

(नेग निछावर आदि लेकर थाली का नाम दिखाती है, सूपा में रखकर बच्चे को सूर्य दर्शन कराती है। झूला में शिशु को झुलाते हैं)

(गीत)

रामचन्द्र लिहले जनमवा हो रामा..

अवध नगर में ...

सखियन अइली मंगल गवन को

मांगे लगली .... हाय

मांगे लगली राम के ओढ़निया हो रामा

अवध नगर में...।

रामचन्द्र लिहले जनमवा हो रामा..

बुआ - (नेग निछावर आदि लेकर थाली का नाम दिखाती है, सूपा में रखकर बच्चे को सूर्य दर्शन कराती है। झूला में शिशु को झुलाते हैं) ब्राह्मणो, आप लोगों के लिए भोजन की व्यवस्था है। भोजन ग्रहण करें।

(सभी बालक को उठाकर निष्क्रमण के लिये प्रस्थान करते हैं)

गुरु- (एक बार घूमकर) ऊँ भोजन हो गया।

क्यों – ये क्या हुआ गुरुजी?

गुरु– ये नाटक है, अभिनेता के घूमने मात्र से सब परिवर्तित हो जाता स्वर्ग नरक और नरक स्वर्ग बन जाता है।

क्यों– अच्छा गुरुजी। दो बार घूमता है।

क्या– चार बार घूमता है (गुरु आश्चर्य से देखते हैं)।

क्या– (उपहास करते हुये) बहुत भोजन हो गया.....,

गुरुजी आपने ही था। यह नाटक है.....

गुरु - अरे मूर्खो, चलो अब यहाँ से निष्क्रमण करो। (देखकर)

6. निष्क्रमण संस्कार

देखो, देखो आगे निष्क्रमण संस्कार चल रहा है।

क्यों– निष् निष् (क्या एक फटका मारता है) निष्क्रमण क्यों होता है गुरुजी।

गुरु– जन्म के एक माह पश्चात् शिशु को पहली बार देवदर्शन, सूर्य–चन्द्र दर्शन के लिये और प्रकृति की निसर्ग में ले जाया जाता है।

क्यों– हम को भी निकाला गया था क्या ?

क्या– प्रकृति की निसर्ग में .....?

गुरु– अरे मूर्खों तुमको तो बचपन से ही घर से निकाल दिया गया था तभी तो तुम दोनो मेरे माथे पर तांडव मचा रहे हो।(घूमने का प्रयास)

क्यों– गुरुजी घूमने वाली नहीं अब तो सचमुच की भूख लग रही है।

7. अन्नप्राशन संस्कार

गुरु– हाँ हाँ अब वहीं पर चल रहे हैं, अगला संस्कार है *अन्नप्राशन संस्कार* ।

क्या– अङ्ग प्रदर्शन....? (अङ्ग प्रदर्शन करता है)

गुरु- अङ्ग प्रदर्शन नहीं मूर्ख "अन्नप्राशन-अन्नप्राशन"। इस संस्कार में बालक को प्रथम बार छह रसों से युक्त व्यञ्जन बालक को खिलाया जाता है। मीठा, खारा, तीखा, कड़वा, खट्टा और कषैला। वो भी तब जब जातक छह मास का हो जाये।(यज्ञकुण्ड लाओ)

क्यों– अच्छा गुरुजी, तो क्या शिशु छह माह से भूँखा था ?

गुरु- नहीं बच्चा वह शिशु छह माह तक सिर्फ स्तनपान करता है।

(अन्नप्राशन का पूजन दृश्य)

गुरु–शिष्य ॐ प्राणाय...स्वाहा। ॐ व्यानाय...स्वाहा। ॐ समानाय....स्वाहा।

गुरु- खीर, अग्निप्रदक्षिणा कराइये, बालक को खिलाइये।

क्या- खीर क्यों गुरजी? (कुरकुरे दिखाते हुये) ये खिलाइये गुरुजी।

क्यों– (पेप्सी दिखाते हुये) ये पिलाइये.... ये ही है राईट च्वाईस बेब्बी, आ..हा।

गुरु- अरे चुप, यही सब फास्ट फूड खिला खिला कर बच्चों का पाचन तंत्र खराब कर दिया है।इसलिये बालक को शुद्ध दूध, घी, शहद आदि से निर्मित खीर ही खिलाना चाहिये। क्योंकि,

आहारशुद्धौ सत्त्वशुद्धिः, सत्त्वशुद्धौ ध्रुवा स्मृतिः, स्मृतिलम्भे सर्वग्रन्थीनां विप्रमोक्षः।

अब बालक की आजीविका जानने के लिए विविध क्षेत्रों की विभिन्न सामग्री यहाँ पर लाकर रखिये।

नटी 1– हमारा बच्चा तो संगीतकार बनेगा।

नटी 2- हमारा बच्चा तो विद्वान बनेगा।

नटी 3- हमारा बच्चा तो चिकित्सक बनेगा।

क्यों– ये क्या है गुरुजी ?

गुरु– अरे बालक जिस वस्तु का स्पर्श करेगा उसी के आधार पर उसकी आजीविका का निर्धारण किया जावेगा।(शिशु को वस्तुओं के पास ले जाते हैं।)

(गीत)

धन धन नगर अयोध्या, धन राजा दशरथ हो ...
रामा धन्य कौसल्या जी के भाग .. रमैया जहाँ जनसे .... हो

क्यों– क्या नाटक है गुरुजी बच्चा तो कुछ छूता ही नहीं ?

गुरु– अरे वो छुयेगा भी नहीं,बच्चा तो नकली है।

सभी लोग– (आश्चर्य से) नकली, क्या, गुरुजी सारा भेद खोल दिया..

क्यों– क्या कहा नकली है ? गुरुजी माना कि हम मूर्ख हैं किन्तु दर्शक मूर्ख नहीं हैं। जनता जबाब माँगती है।

गुरुजी– अरे चुप ! यहाँ क्या उत्तर दूँ, हूँ..... अरे पूर्वजन्म के कर्मों के अनुसार बालक वस्तु का स्पर्श करेगा अथवा देशकाल परिस्थिति के अनुसार उसके मन में जो होगा उसको छुयेगा, अरे मैं इतने कम समय में असली बच्चा कहाँ से लाऊँ ?

क्यों– तो फिर अब आप क्या करेंगे ?

गुरु– क्या करेंगे क्या, सब जानते हैं क्या करना है।

ए लाईट.. off.

8. मुण्डन संस्कार

क्यों– अरे, मेरे बालों को छोड़िये गुरुजी।

गुर– अरे, मेरी धोती छोड़।

क्यों– मेरा बाल छोड़िये गंजा करेंगे क्या ?

गुरु– गंजा.., हुँ, इससे याद आया चौलकर्म संस्कार।

शिष्य– क्या चौरकर्म ?

गुरु- अरे मूर्खों ! चौलकर्म, मुण्डन मुण्डन संस्कार।

(दृश्य – बालक का पिता नाई को रुपये दे रहा है)

क्या– रुको..रुको, मुझे दो।

गुरु- कितना मूर्ख बालक है ?

(दृश्य – मुण्डन संस्कार, पिता- बालक के दाहिने भाग के बाल काटिये, बुआजी – बालों को गोद में झेलें)

क्या– अरे कितने सुन्दर बाल हैं ,क्यों काट रहे हैं ?

गुरु– अरे बच्चा ! बालक के तीसरे वर्ष में मुण्डन किया जाता है। जब सूर्य की किरणे मस्तक पर पड़ती हैं तो उसका मस्तिष्क तीक्ष्ण होता है, चर्म रोग आदि से भी मुक्ति मिलती है , ऐ.. नापित ! मुण्डन सम्पन्न हुआ ना ?

नापित– जी महाराज, सम्पन्न हो गया।

9. कर्णवेध संस्कार

गुरु– अरे अब इस बालक का कर्णवेध संस्कार होगा इसलिये स्वर्णकार को बुलवाइये।

नाई– श्रीमान् ! कर्णवेध तो मैं अच्छी तरह से जानता हूँ। मैं तो जन्मना स्वर्णकार हूँ, इसलिये कर्णवेध तो मैं ही कर दूँगा।

क्या– क्यों रे! सब तू ही करेगा ? कर्णवेध तो मैं ही करूँगा।

नापित– ओए... जो मिलेगा, तेरा आधा और मेरा आधा, ठीक है।

गुरु– अरे जो जिस का कार्य है वह उसी को शोभा देता है।

गुरु– कर्णवेध प्रारम्भ कीजिये।

क्या– गुरुजी कितना कोमल कान है .....

गुरु– अरे बच्चा कर्णवेध करने से बालकों में नपुंसकता का नाश होता है, "हारनिया" का भी और कन्याओं का कर्णवेध करने से वन्ध्यत्व सन्तानहीनता का नाश होता है, समझा (नापित को देख कर) कर्णवेध सम्पन्न हुआ क्या ?

नाई– जी महाराज।

10. **अक्षरारम्भ संस्कार (विद्यारम्भ)**

गुरु– अच्छा अब इस बालक का **अक्षरारम्भ संस्कार** होगा।

नटी 1- ये क्या पण्डित जी ऐसा भी कभी होता है क्या ?

नटी 2– अक्षरारम्भ तो पाँच वर्ष के बालक का होता है।

नटी 3– सब कुछ क्या इसी बालक का कर देंगे पण्डित जी ?

नटी 4– नहीं नहीं भगवन, जब यह बालक पाँच वर्ष का हो जायेगा तभी हम आयेंगे।

गुरु– अरे ! तब तक,पाँच वर्ष तक क्या ये दर्शक यहीं बैठे रहेंगे ? रुकिये रुकिये सुनिये तो सही।

(क्यों सब को रोकता है)

क्या– गुरुजी ! ये महिलायें ठीक कह रहीं हैं।

गुरु– अच्छा ! क्यों रे .. तुमने कुछ पढा लिखा है कि नहीं।

क्यों– हाँ महाराज पढा हूँ।

गुरु– कहाँ तक ?

क्यों– दोपहर तक।

गुरु– और तुम ?

क्या– मैं ....मैं ..... नहीं नहीं इस बार मैं कुछ नही◌ं बनूँगा।

पहले मुझे भ्रूण बना दिया अब मेरा अक्षरारम्भ भी करेंगे? नहीं नहीं मैं कुछ नही◌ं करुँगा। मैं तो पच्चीस वर्ष का हूँ।

गुरु– अरे पच्चीस वर्ष का होते हुये भी तेरी बुद्धि तो मात्र पाँच वर्ष की ही है (ओले ओले.....)

स्त्री– गुरुजी इस बच्चे का क्या करें फिर ?

गुर– इसे मुझे दे दो। कितना सुन्दर वच्चा है।

(दृश्य –अक्षरारम्भ संस्कार, काष्ठ-पाटी और मोर पंख से बालक का हाथ पकड़ कर लिखवाते हैं)

श्री गणेशाय नमः, सरस्वत्यै नमः, कुलदेवताय नमः, श्री गुरुभ्यो नमः,वासुदेवाय नमः,ओम् नमः सिद्धम्।

11. उपनयन संस्कार

गुरु– अब अगला संस्कार है .....

क्या– उपनयन संस्कार।

गुरु– (शिष्य को देखते हुये) उपनयन अर्थात◌् ....

क्या– गुरु के समीप जाना।

न व्रतं व्रतमित्याहुःब्रह्मचर्यं व्रतोत्तमम्। ,
ऊर्ध्वरिता भवेत् यस्तु स देवो न तु मानुषः।।

(उपनयन संस्कार दृश्य)

(वस्त्रधारण/पादुकाधारण/पादप्रक्षालनम्/यज्ञोपवीतधारण)

मन्त्रोच्चारण –

अज्ञान-तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन-शलाकया।
चक्षुरुन्मिलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं, प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्रं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

(गायत्रीमन्त्र/भिक्षाटन् भवति! भिक्षां देहि)

(गीत)

जौ ना बने सिखियों न डोला ले मृगछाला . . .
आजु हमरा बरुआ के जनेऊआ होखे ला . . .

12. वेदारम्भ संस्कार

(दृश्य, गीत)

(अइउण् ऋलृक् एओङ् ऐऔच् हयवरट् लण् ञमङणनम् झभञ् घढधश् जबगडदश् खफछठथचटतव् कपय् शषसर् हल्)

प्रविशति गुरुः, सहस्त्रशीर्षा पुरुषः(वेदपाठ)

शिष्य 1– वेद क्या होते हैं गुरुजी?

गुरु– इष्ट की प्राप्ति और अनिष्ट का परिहार करने के लिये जो अलौकिक उपाय बतलाता है वह वेद है। अपौरुषेय वाक्य वेद हैं।

शिष्य 2– भगवन वेद के अङ्ग कितने हैं ?

गुरु– शिक्षा-कल्प-व्याकरण-निरुक्त-ज्येतिष-छन्द ये छह वेदाङ्ग हैं।

शिष्य 3– श्रीमन् ! संस्कार क्या है ?

गुरु– सम्यक् आचरण ही संस्कार है, मानव जीवन के निर्माण में संस्कारों का बड़ा महत्त्व है।

जन्मना जायते शूद्रः कर्मणा द्विज उच्यते।

शिष्य 4- भगवन् ! वेदाध्ययन के पश्चात् कौन सा संस्कार होता है ?

गुरु– वत्स ! बारह वर्षों तक वेदाध्ययन होता है आज कल के युग में स्नातकोत्तर अर्थात् P.G. तक अध्ययन होता है।

(दृश्य - वेदारम्भ संस्कार की समाप्ति)

इसके बाद केशान्त संस्कार होता है।

13. केशान्त संस्कार

शिष्य– (शंका करते हुए) श्रीमान्, ये केशान्त क्या है**?** क्या फिर से मेरा भी केशान्त होगा**?**

गुरु– नहीं नहीं वत्स, चौलकर्म या मुण्डन संस्कार में तो केवल मस्तक के केश का मुण्डन होता है। इस केशान्त संस्कार में तो मुण्डन के साथ साथ पहली बार दाढी मूंछ आदि का भी मुण्डन होता है।

शिष्य– इस से भला क्या लाभ है**?**

गुरु– इस से संस्कारित लोगों के स्वास्थ्य सम्बन्धी बाधाओं का विनाश होता है।

अब उठो बच्चा, तुम्हारा समावर्तन किया जाएगा।

14. समावर्तन संस्कार

(समावर्तन दृश्य)

(फूल से अभिषेक, नवीन वस्त्रधारण, शिक्षोपनिषद आदि)

वेदमनूच्यार्योन्तेवासिनमनुशास्ति। सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यायान् मा प्रमदः। आचार्याय प्रियं धनमाहृत्य प्रजातन्तु मा व्यवच्छेत्सीः। सत्यान्न प्रमदितव्यम्। कुशलान्न प्रमदितव्यम्। भूत्यै न प्रमदितव्यम्। स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्। देवपितृकार्याभ्यां न प्रमदितव्यम्। मातृदेवो भव।पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव। अतिथिदेवो भव। यान्यनवद्यानि कर्माणि तानि सेवितव्यानि। नो इतराणि। यान्यस्माकं सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि।।

गुरु- वत्स! अब तुम गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करने योग्य हो गये हो गृहस्थ आश्रम की कोई जिज्ञासा अगर मन में है तो निःसंकोच पूँछो।

शिष्य– भगवन! गृहस्थियों का परम कर्तव्य क्या है।

गुरु– सानन्दं सदनं सुताश्च सुधियः,कान्ता न दुर्भाषिणी

सन्मित्रं सुधनं स्वयोषिति रतिश्चाज्ञापराः सेवकाः।

आतिथ्यं प्रभुपूजनं प्रतिदिनं मिष्टान्नपानं गृहे,

साधोः सङ्गमुपासते हि सततं धन्यो गृहस्थाश्रमः।।

15. विवाह संस्कार

(विवाह- दृश्य) (गीत)

सोणा वटना मैं न मलना, क्यूं कुड़िये तू क्यूं न मलना।

बावला वर ए हो जा कोई तिगणां मैं न◌ा पाव◌ै,
चढ◌ कोठे पे वेखन लगियां तेनूं रिड़का आव◌ै,
के जिस मेंरा तेनूं चुरा ल◌ेया वे,
किस◌ी ने सुतड़ा जगा ल◌ेया वे
कि गड़ियां चढ दा उतरा ल◌ेया वै।।

[चटर मटर का मेरा घाघरा, गेहूं दाना की चूंदड़ी
मटियाले रंग का, मटियाले रंग का कुर्ता,
मेरा झिलमिल –झिलमिल गात करै।
तात पानी सीड़ा हो गया, आजा ने गोरी नहावेंगे
मै◌ं राम की स◌ु, मै◌ं राम की स◌ु गोरी, मेरे न्हाये कारे हो जायेंगे।।
रोटी धर◌ी स◌ेमैज पै आजा न◌े गोरी खावेंगे। मैं राम की स◌ु
मैं राम की स◌ु गोरी, मेरे खाये माड़े हो जायेंगे।।]

(बारातआगमन/स्वागत/द्वारपूजन/मधुपर्क/कन्याप्रवेश/ पाणिग्रहण/ कन्या दान/संकल्पादि)

गुरु- जलडालने के लिये कन्या के भाई को बुलाइये।

नटी– भाई भाई-अरे ! सुन्दर...कालू....लखन....

गुरु– अरे !अरे वो तो दर्शक हैं कन्या के भाई नहीं।

नटी 2– भाई कहाँ से लाये पण्डित जी, नाटक में जितने हैं, सब मंच पर ही हैं।

गुरु– अरे.. यहाँ.. कुशीलव हैं.... पात्र हैं। इन◌्हीं बीच कोई भाई देख लो।

क्या– अरे क्यों ......

क्यों- हाँ भाई।

सखियाँ– भईया.....। यही हमारे भईया बनेंगे।

क्यों– (गुस्से में,चिढते हुये) मैं नहीं बनूँगा, मैं संगीत करूँ, मैं ही बजाऊँ, इस बुढ्ढे का मार भी सहूँ। नहीं नहीं मै◌ं भाई-वाई नहीं बनूंगा।

गुरु– अरे बच्चा ! कन्यादान महापुण्य का कार्य है। पुण्य शालियों को ही ऐसा सौभाग्य प्राप्त होता है।

क्यों– अच्छा गुरुजी।तो यह कन्यादान है क्या ?

गुरु– सुनो बच्चा..

क्यों- ऐसे नहीं गुरुजी, संगीत के साथ सुनाइये।

गुरु- **त्रीणि दानानि लोकेस्मिन् प्रधानानि वदन्ति वै।**
कन्यादानं च भूदानं विद्यादानं तथैव च।।

(इस लोक में तीन प्रकार के दान प्रधान होते हैं – कन्यादान, भूदान और विद्यादान।) समझे।

(ग्रन्थिबन्धन/पादपूजन/पाणिग्रहण/हाथ पीले/शिलारोहण/लाजा होम)

मन्त्रः – ओम्,

मम व्रते ते हृदयं दधातु, मम चित्तमनुचित्तं तेऽस्तु।

मम वाचमेकमनाजुषस्व, प्रजापतिस्त्वा नियुनक्तु मह्यम्।।

गुरु– उठो बालक! अग्नि की प्रदक्षिणा करो।धर्म-अर्थ-काम और मोक्ष के निमित्त चार परिक्रमा करनी चाहिये, प्रथम तीन परिक्रमा में पत्नी आगे रहेगी, चौथी मोक्ष की परिक्रमा में पति आगे होगा, बाकी लोग सप्तपदी (सात वचनों) का गायन करेंगे।

(सप्तपदी)

महिलाः- *तीर्थव्रतोद्यापनयज्ञदानं*
मया सह त्वं यदि कान्त कुर्याः।
वामाङ्गमायामि तदा त्वदीयं
जगाद वाक्यं प्रथमं कुमारी।।

पुरुषाः- *मदीयचित्तानुगतं च चित्तं,*
सदा मदाज्ञा परिपालनञ्च।
पतिव्रता धर्मपरायणा त्वं,
कुर्याः सदा सर्वमिमं प्रयत्नम्।।

महिलाः- *न सेवनीया परपारकीया*
त्वया भवोद्भाविनी कामिनीति।
वामाङ्गमायामि तदा त्वदीयं
जगाद कन्या वचनं च सप्तमम्।।

(गीत)

श्री रघुवर कोमल कलमनयन को पहनाओ जयमाला,
तुम पहनाओ जयमाला, ये पुण्य मुहूरत, स्वर्णिम अवसर
फिर नहीं आने वाला, तुम पहनाओ जयमाला, सखी पहनाओ वरमाला।।

(विदाई दृश्य) (गीत)

साड्डा चिड़ियाँ दा चम्बा वे बाबुल असा उड़ जाँणा,
मार लम्बी उड़ारी वे पता नी केणे देश जाणा
साड्डा चिड़ियाँ .....

क्यों– बस कीजिये गुरुजी! बजाते ही रहेंगे क्या ? मेरा समावर्तन संस्कार के बाद क्या सीधे मृत्यु ही होगी ?
गुरु- क्या रे ब्रह्मचारी! क्या हुआ?
क्यों- आप का ध्यान मेरे पर नहीं है।
गुरु- क्यों, क्या हुआ ?
क्यों– गुरुजी मेरा भी विवाह संस्कार करवाइये ना।
गुरु- अरे बच्चा! अभी तुम उस योग्य नहीं हो।
क्यों- (आश्चर्य से) क्या.....
गुरु- अ..अर्थात् तुम्हारा मस्तिष्क विवाह योग्य नहीं है।
क्यों– नहीं नहीं गुरुजी..पूछिये आप क्या पूछना है?
गुरु– अच्छा तो बता- मृत्यु क्या है?
क्यों– (सस्वर)
वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नवोऽपराणि।

तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-न्यन्यानि- संयाति नवानि देही।।

गुरु- बहुत अच्छा बालक।

क्यों– (शर्माते हुये) अब करवाईये मेरा विवाह।

गुरु- अरे अभी एक संस्कार का प्रदर्शन करना बाकी है बच्चा..

16. अन्त्येष्टि संस्कार

क्यों- (आश्चर्य से) मृत्यु.....वो भी मंच पर, दर्शक देखेंगे., नाट्यशास्त्र के नियम.. (शिव, शिव, शिव)।

गुरु- वत्स! मृत्यु संस्कार परम पवित्र है। जीवन एक चक्र के समान परिवर्तित होता है।

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः ध्रुवं जन्म मृतस्य च।

जिसका जन्म हुआ है उसकी मृत्यु निश्चित है। बालक, फिर भी मोक्ष की प्राप्ति ही जीवन की परम प्रयोजन है। अभिनय के माध्यम से आत्मा परमात्मा के मिलन को दिखलाते हैं।

(दृश्य- मृत्यु संस्कार)

(नेपथ्ये – संस्कार घर बेटी पैदा हुई है ... बेटी..)

(गाना बजाना शुरू करो)

(गीत)

बधाइयाँ बीबी तेनूं, बधाईया णी...
बधाइयाँ तेरे आर नूँ, परिवार नूँ
तेरे सोणे जे संसार नूँ बधाइयाँ णी। . . . . .

(भरतवाक्य)

लब्ध्वा संस्कार-शुद्धिं प्रशमितकलुषाः सन्तु लोके मनुष्याः
नाशं यान्तु प्रदोषाः निखिलरिपुगणा मानसे जायमानाः।
सुस्निग्धाः सन्तु लोकाः सकलजनमनोनन्दिनो धर्मनिष्ठाः
स्वाधीना स्वार्थहीना भवतु वसुमती सर्वसंस्कारयुक्ता।।

[संस्कार शुद्धता को प्राप्त कर इस लोक में समस्त मनुष्य के पाप शान्त हो जावे। मन में भी उत्पन्न होने वाले दोषयुक्त समस्त रिपु गण नष्ट हो जावे। समस्त जन मानस को आनन्द देने वाले, धर्म से युक्त सुन्दर संसार हो जावे। सभी प्रकार के संस्कारों से युक्त यह वसुमती स्वार्थ से रहित एवं स्वाधीन होवे।]

0-0-0

॥ श्रीः॥

नाटकम्

षोडष-संस्कारम्

(सोलह संस्कार)

नाट्यकारः

डा. धर्मेन्द्र कुमार सिंहदेव

निर्देशकः

श्री मनोज मिश्रः

प्रस्तुतिः

श्रीनाट्यम्

(The Group of Sanskrit Drama)

वीणापाणि-संस्कृत-समितिः

भोपालम्, मध्यप्रदेशः

षोडशसंस्कारम्

अथ नान्दी

श्रीनाट्यं रचितं मुदे तव रमे! रङ्गस्थलीयं धरा
चन्द्रार्कावपि तत्प्रकाशनपरौ रात्रिः पटाक्षेपिनी।
सोऽहं चास्य निदेशको ननु जगन्-मञ्चेऽपि तन्मञ्चितं
जीवैरित्यतिहर्षपूरितमनाः पायात् प्रभुः पावनः।।

(ओम् –कारम् उच्चारयन् प्रविशति गुरुः, शिष्यौ गुरोः स्यूततः द्रव्याणि अन्वेषयतः । गुरुः कुप्यति ।)

गुरुः – (सरोषम्) ओम्.....

शिष्यः– नमः शिवाय

गुरुः – अरे ! समागताः सहृदयाः दर्शकाः । प्रणमत ।

शिष्यौ– (हस्तान् उत्पाप्य Hello – रीत्या अभिवादयतः)

गुरुः – No modernism, proper Pranam

शिष्यौ – (साष्टांगं प्रणमतः)

गुरुः – अये ! संस्कृतनाटकमिदम् । नाट्यशास्त्रीयमुद्राभिः अभिवादयतम् ।

शिष्यौ – (विकृतं प्रणमतः)

गुरुः – (तौ ताडयन्) त्वादृशानाम् एव धूर्तानां कारणात् भारतीयसंस्कृतेः सभ्यतायाश्च पतनं जायते ।

शिष्यः 1- किम् पतनं जायते ?

शिष्यः 2- कथं पतनं जायते ?

शिष्यः 1- अस्माभिः किं कृतम् ?

शिष्यः 2- कथं भवान् एवं भणति ?

शिष्यौ – किम् .. / कथम् .. / किम् .. / कथम् ???

गुरुः – तूष्णीं भवतम् । यस्माद् दिनाद् युवयोः भारं शिरसि वहामि, तस्माद् दिनाद् मम जीवनं कष्टप्रदं संजातम्।

आदिनं युवयोः असम्बद्धानां प्रश्नानाम् उत्तरप्रदानेन क्लेशम् अनुभवामि ।

अतः मया एतस्य नाम **किम्** (शिष्यः 1) तथा एतस्य **कथम्** इति नामकरणं कृतम् ।

अहह ! भवतां समक्षम् अहं किमर्थं विलपामि ।

I am sorry, no Personal talk, वयम् अत्र नाटकार्थं समागताः ।

तत्र अस्मांक भारतीयसंस्कृतेः षोडश संस्काराः.....।

शिष्यः – षोडश संस्काराः, नहि, षोडश शृंगाराः इति ।

कथम् – 'चतुर नार कर के शृंगार.....'

गुरुः – अहो ! अरे धूर्ताः, त्वया कदापि संस्कारः इति पदम् श्रुतम् ।

शिष्यः- श्रुतम्, मया - अन्तिमः संस्कारः । 'राम नाम सत्य है' 'राम नाम सत्य है'

गुरुः – अहो ! शान्तं पापम् । नान्दीसमये एतादृशम् अमंगलम् पदम् ? (दर्शकान् अभिलक्ष्य)

वदन्तु भवन्तः । अहं षोडश संस्काराः इति नाटकम् अभिनेष्यामि, उत वा एतौ संस्कारान् पाठयामि ।

कथम् – किं भणति भवान् ? किमर्थं वा एवं कथयति । किं वा प्रारभते भवान् ?

गुरुः – (उभयोः मुखे पिधाय) एवं विज्ञापयामि – तत्र षोडशसंस्कारेषु प्रथमः संस्कारः भवति –'गर्भाधानम्' ।

शिष्यः – किम् किम् 'गरवा' ?

(शिष्यौ 'गरवा' नाटयतः)

गुरुः - अहहो! शिव, शिव । मूर्ख ! 'गरवा न' 'गर्भः' गर्भः (इति सुदूरं दर्शयति)

शिष्यः – एवं गर्भः । (गर्भिणीव नाटयति)

शिष्यः – श्रीमन् किं नाम गर्भः ? कथं वा भवति ? (किम् + कथम्। किम् + कथम्)

गुरुः – (मुखे पिधाय) – ओम् ! गर्भाधान-संस्कारः । एषः संस्कारः सन्तानकामनार्थं भवति । शुभे मुहूर्ते देवान्

पूजयित्वा दम्पत्ती रात्रौ समागमं कुर्याताम् ।

(स्त्री-पुरुष-समागम-नामानि श्रुत्वा शिष्यौ गुरोः सविधे सौत्कण्ठ्यम् उपाविशतः)

किम्/कथम् – प्रभो, आवयोरपि गर्भाधान-संस्कारं विदधातु ।

गुरुः – अरे ! युवयोस्तु अहम् अन्तिमं संस्कारं करिष्यामि ।

(नेपथ्ये – नाटकम् प्रारभ्यताम्.)

अस्तु, अथेदानीं प्रारभ्यते गर्भाधान-संस्कारः । (निष्क्रान्तः)

(नेपथ्ये – त्वर्यताम्, त्वर्यताम्। आगच्छन्तु। नवा वधूः आयाति।)

गर्भाधानम्

ततः गर्भाधान-दृश्यम्, लोकगीतम् (नाका चलना.....)

(संकल्पादिकृत्यम्/ पञ्चतत्त्वानां समावेशः /गर्भोत्पत्तिः.....)

(पुंसवनम्–सीमन्तोन्नोयन-संस्कारदृश्यम्)

(ततः पुंसवन-संस्कार-श्लोकं पठन् प्रविशति गुरुः । शिष्यः (छिक्कां कुर्वन्) तम् अनुसरति ।

गुरुः - मूर्ख! एतादृशं दुष्टाचरणं किमर्थम् । किं जातं तव ।

शिष्यः – भगवन् ! सम्पन्ने संस्कारे औषधीनां प्रयोगः.....

गुरुः – वाढम् ! तत् तु पुंसवन-संस्कारस्य औषधं /पथ्यम् आसीत् ।

शिष्यः – पुंसवनम् । किम् एतत् भगवन् ।

गुरुः – वत्स! पुसंवन–संस्कारः गर्भाधानस्य तृतीये मासे क्रियते । तदा आयुर्वेदानुसारेण वटशुंगस्य रसः नासिकायां पात्यते । तत्र च, दक्षिण-नासापुटे पतने पुत्रो जायते, वामनासापुटे पतने च स्त्री भवति ।

शिष्यः– प्रभो ! त्राहि माम्, त्राहि माम् । सः तु दक्षिणे, यथा तु वामनासिकापुटे तं रसं गृहीतवान् । किम् वामे.....स्त्री/ वामे/वामे/स्त्री.....

गुरुः – तूष्णीं भव ।

शिष्यः – किम् अहं स्त्री भविष्यामि ?

गुरुः – अरे मूर्ख ! तत् तु गर्भे भवति ।

शिष्यः – (सोपहासम्) किं गर्भः ! सः घटः (उपहसति)

गुरुः – हूँ। न स घटः । सः गर्भः आसीत्। वयम् अभिनयं कुर्मः किल। तत् तु गर्भस्य प्रतीकम् आसीत्।

शिष्यः – हाँ...हाँ.....घटे गर्भः। घटे गर्भः।

गुरुः – (सक्रोधम्) अरे ! तूष्णीं भव।

शिष्यः – तावत् किल, किम् किम् आसीत्, तत् शंखजलम् स धू.....धूमः.....।

गुरुः – अरे ! तत् पंचतत्त्वम्। पृथिवी–अप्–तेजो–वायु–आकाशाः। एतैरेव शरीरं निर्मीयते।

शिष्यः – किम् मम शरीरे पञ्च तत्त्वानि सन्ति ?

गुरुः – शरीरनिर्माणं तु पञ्च तत्त्वैरेव भवति। प्रभुः जानाति, तव शरीरे किं तत्त्वम् अस्ति। क्षम्यताम्
अथ प्रारभ्यते सीमन्तोन्नयन-संस्कारः।

शिष्यः– (छिक्कां कुर्वन्) छींमन्तोन्नयनम्। किमेतत् प्रभो।

गुरुः – मूर्ख ! सीमन्तः अर्थात् (केशान्तः)। उन्नयनम् उपरि नयनम् (अभिनीय)

शिष्यः – किमर्थमेतत् ?

गुरुः – वत्स ! गर्भधारणात् सप्तमे मासे गर्भस्थशिशोः मस्तिष्कं विकसति।

शिष्यः- किम्, मम मस्तिष्कस्यापि विकासोऽभवत्।

गुरुः – शिव, शिव, शिव.... त्वयि मस्तिष्कं हि नास्ति चेत् विकासः कस्य ?

सीमन्तोन्नयन-दृश्यम्

(.....)

(गुरु-शिष्यौ प्रविशतः। पूजयतः च)

गुरुः – श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः। (पुष्पम् –अर्पयति.....)

(कंकपत्रेण केशविन्यासं कुरु। वेणीबन्धनं कुरु) ..... अर्पय,.....) पुरुषाः निर्गच्छन्ति।

भो पण्डिताः, सम्पन्नः संस्कारः। अत्र कोपि पुरुषः न भवेत्। त्वमपि गच्छ।

(बधाई –गीतम्)

दृश्यम् – जातकर्म–संस्कारस्य

(गीतम् – जागे.....)

(शिष्यः स्त्रीभूय नृत्यति।) (नवजात-शिशुः कर्णे पिता वदति)

भूस्त्वयि दधामि, भुवस्तयि दधामि, स्वस्त्वयि दधामि, ओम्, भूर्भवः स्वः सर्वं त्वयि दधामि।

गुरुः – जातकस्य मुखे ॐकार-लेखनाय मधु आनय, अरे वत्स! मधु आनय।

शिष्यः – मधो ! ए मधो ! बालिके मधो !

गुरुः – अरे ! मधु – शहद मधु आनय

(विलोक्य) (अरे मूर्ख !) अरे ब्रह्मचारिन् ! स्त्रीणां मध्ये प्रविश्य नृत्यसि। शिव शिव.....

स्वर्णशलकया ॐकार-लेखनेन बालस्य आध्यात्मिकः विकासः जायते। अस्य संस्कारस्य अपरं नाम मेधाजनन संस्कारः इत्यपि कथ्यते

(बालकस्य मुखे ॐकारं रचयति) गीतम्.....)

किम् – गुरु जी, गुरु जी

कथम् – गुरुजी, गुरुजी, प्रेतः प्रेतः (स्त्रियः उपहसन्ति)

गुरुः – भूतप्रेतः कुत्र.....।

कथम् – एषोऽस्ति प्रभो ! (नेत्रे निमीलति)

गुरुः – अरे किम् ! किमभवत् ।

किम् – गुरुजी । घटम् आनेतुम् अहम् गतवान् । एताः माम् भ्रूणं कृतवत्यः (स्त्रीन् दर्शयति)

कथम् – (उच्चैरुपहसति)

गुरुः – अहो, महान् अनर्थो जातः । वत्स ! याहि, स्नानविधिं समाचर ।

गुरुः – (परिक्रम्य) अरे अरे, दश दिनानि जातानि । शिशोः नामकरणेन भवितव्यम् । सर्वं सज्जीकरणीम् । स्वच्छता करणीया ।

कथम् – प्रभो ! नामकरणं किं भवति ।

गुरुः– नामकरण–संस्कारः जातस्य शिशोः एकादशे अहनि क्रियते । कलशम् आनय।

कथम् – किमर्थं नामकरणं क्रियते ।

गुरुः – पूजास्थालीम् आनय। (सविस्मयं, विमृश्य), यतोहि नाम्ना एव व्यक्तेः अभिज्ञानं भवति ।

शिष्यः – अभिज्ञानमेव अशान्तेः मूलम् । नाम न स्यात् तदा अभिज्ञानं न स्यात् ।
अभिज्ञानं न स्यात् तदा जातिः न स्यात् । जातिः न भवेत् तदा विवादः न भवेत् ।
सर्वे समाना एव। (सस्मितम्) भवान्.....अहम् समौ एव .....।

गुरुः – अरे मूर्ख ! गुरोः समतुल्यः भवसि । समूहे अभिज्ञानार्थं नामकरणं भवति । (उच्चैः) अरे मूर्खं किम् ?

किम् – एषोऽस्मि !

गुरुः – अतः नाम क्रियते । अस्तु ।

(गुरुः पूजयति /शिष्यः तम् अनुकरोति /स्वतिवाचनम्.....पुण्याहवाचनम् /संकल्पादिकम्.....)

गुरुः- बालस्य जातकं / पंञ्चांगं निर्मापयितव्यम् । पितृस्वासारं चाह्वयत

गुरुः – जन्मपत्रिकायाः आदिवर्णः 'स' कारः

(मञ्चास्थाः विभिन्नानि नामानि वदन्ति – सपोला, सम्पत्, सल्लू, सर्फ एक्सेल)

गुरुः- तूष्णीं भव, किमेतत् नाम भवति, बालकस्य नाम तु देवतानां, मासानां, नक्षत्राणां, लोकव्यवहाराणाम् आधारेण कुर्यात् ।

बुआ जी – भो पण्डित! अहं जानामि मम अधिकारम् ।

(गीतम् – रामचंद्र लिहले जनमवां हो रामा.....)

(दृश्यम् – सूर्य दर्शनम्, दोलारोहणं, आदि)

बुआ – भो पण्डिताः, सम्पन्नः नामकरण-संस्कारः, भोजनं गृहाण, व्यवस्था तत्र वर्तते ।

(बालकं संगृह्य सर्वे निष्क्रामन्ति)

गुरुः – (परिक्रम्य) ॐ भोजनं सम्पन्नम् ।

कथम् – भगवन्! किं भवति ?

गुरुः – नाट्मेतत्, परिक्रमामात्रेण सर्वं परिवर्तते । मर्त्यः स्वर्गः जायते ।

कथम् – एवमेव – (परिक्रामति) एकवारम्

किम् – (परिक्रामति वारचतुष्टयम्) (गुरुः – साश्चर्यं पश्यति)

किम् – (उपहस्य) ओहो पर्याप्तं जातम् । भवता एव उक्तं संस्कृतनाट्यमेतत्

गुरुः – अरे मूर्ख, चल, इतः निष्क्रमणं कुरु । (विलोक्य) अरे पश्य अग्रे निष्क्रमण-संस्कारः प्रचलति ।

कथम् – निष् निष.....(किम् चपेटां ददाति) निष्क्रमणं किम् भवति प्रभो ।

गुरुः – वत्स! एकमासे व्यतीते शिशुं प्रथमवारं देवदर्शनं सूर्य-चन्ददर्शनं प्रकृत्तिदर्शनं कार्यते ।

कथम् – अस्माकमपि निष्क्रमणं जातं किम्

किम् – प्रकृतौ.....

गुरुः – अरे मूर्ख! युवयोः बाल्यतः एव निष्क्रमणं जातम्। यदर्थं मम शिरसि इदानीमपि ताण्डवम् आचरतः।

किम् – गुरो! परिक्रमणं मास्तु, न तु नाट्यम्, सत्यमेव बुभुक्षा बाधते ।

गुरुः – आम्, तत्रैव गच्छामः। अग्रिमः अन्नप्राशन-संस्कारः

किम् – अङ्ग-प्रदर्शनम् ? (साकूतम्)

गुरुः – अङ्गप्रदर्शनं नास्ति, मूर्ख ! अन्नप्राशनम्

गुरुः – षड्रसैः बालकः सेवनीयः । मधुरः, अम्लः, लवणः, कटुः, तिक्तः, कषायः । एतैः षड्रसैः युक्तं भोज्यं बालकः सेवते । तदपि यदा बालस्य षड्मासाः पूर्यन्ते । इदानीं यज्ञकुण्डम् आनय।

कथम् – षड्मासेभ्यः बालः बुभुक्षितः आसीत् ?

गुरुः – नहि, नहि । सः शिशुः स्तन्यपायी भवति ।

(अन्नप्राशनस्य पूजनम् । गीतम् ॐ प्राणाय, ॐव्यानाय, ॐसमानाय .....

गुरुः – पायसम् अग्निं प्रदक्षिणीकृत्य शिशुं भोजय ।

कथम् – पायसं किमर्थम् ? (चिप्स प्रदर्श्य) एतद् भोजय।

किम् – (पेरसीं प्रदर्श्य) एतत् पायय । (ये है राइट चॉएस बेबी)

गुरुः – मूर्खाः ! एतैरेव 'fast food' भोजनेन बालस्य पाचनतन्त्रं नश्यति । अतः शिशुभ्यः गोदुग्धेन निर्मितं शुद्धं पायसं दीयते ।

अस्तु अन्नप्राशनं सम्पन्नम् । अथेदानीं बालस्य आजीविकानिर्धारणाय सामग्रीः आनय ।

कथम् – एतेन किम् ?

गुरुः – वत्स ! शिशुः यद् वस्तु स्पृशति । तदनुसारेण तस्य तथैव आजीविका भवति ।

(गीतम् .....धन धन.....

कथम् – गुरो ! किमेतत् नाटयति । बालः किमपि न स्पृशति ।

गुरुः – अरे मूर्ख ! एष तु बालः अलीकमेव कथं स्पृशेत् ।

कथम् – (शिव शिव शिव)। अलीकम् अस्तु, वयं मूर्खाः, परं दर्शकाः न मूर्खाः। जनताः उत्तरं वाञ्छन्ति। अत्र किम् उत्तरम् ?

पूर्वजन्मनः कर्मानुसारेण बालः वस्तु स्पृशेत्।

अथवा परिवेशाधारेण यत् मनसि भवति तत्र स्पृशेत्।

गुरुः – अरे ! अहम् अल्पेन कालेन बालं कुतः आनयामि ।

कथम् – तर्हि इदानीं किम् करणीयम्।

गुरुः – सर्वे जानान्ति किम् करणीयम्।

(निष्क्रान्तः)

कथम् – मुञ्च मुञ्च मम केशान्।

गुरुः – मुञ्च मुञ्च मम धौतवस्त्रम्।

कथम् – मुञ्च मम केशान्।

गुरुः- केशान् ! एतैः स्मारयामि चौलकर्म-संस्कारम्

कथम् – किम् चौरकर्म।

गुरुः – अरे मूर्ख ! चौरकर्म न। चौलकर्म, मुण्डनम्। मुण्डन-संस्कारः।

किम – तिष्ठ तिष्ठ। मह्य ददातु।

(दृश्यम् – चौलकर्मणः। बालस्य मस्तकस्य दक्षिणभागस्थान् केशान् कर्तय। पूजनम् /

कथम् – अहो ! सुन्दराः केशाः। किमर्थं कर्त्यन्ते।

गुरुः – अरे वत्स ! बालस्य तृतीये वर्षे मुण्डनं क्रियते। यदा सूर्यरश्मिः मस्तके पतति। तदा तस्य मस्तिष्कं तीक्ष्णं भवति। चर्मरोगाः अपि निवर्तन्ते। अरे नापित ! मुण्डनं सम्पन्नं वा ?

नापितः – सम्पन्नम्, श्रीमन्।

गुरुः – अरे ! अस्य बालस्य कर्णवेधः संस्कारो भविष्यति। तस्मात् स्वर्णकारम् आह्वयत।

नापितः – श्रीमन् ! अहम् दीपकस्वर्णकारः। नाटके तु नापितः जातः। कर्णवेधे तु कुलपरम्परया प्राप्तोऽस्मि। अतः अहमेव कर्णवेधं सम्पादयामि।

किम् – किं सर्वं त्वया सम्पादनीयम् ? कर्णवेधस्तु मया एव करणीयः।

गुरुः – अरे ! यस्य यत् कर्म तस्य तदेव शोभते।

किम् – (गुरुं विलोक्य, नापितं प्रति) – किं रे ! यत् प्राप्स्यसि तत्र तवार्धम् ममार्धम्। (.....)

गुरुः – कर्णवेधः प्रारभ्यताम्।

किम् – गुरो ! किमर्थं कोमले कर्णे छिद्रं कारयसि ?

गुरुः – अरे वत्स ! कर्णवेध-करणे बालकस्य नपुसंकत्वं हन्यते। 'हारनिया' (.....) अपि। कन्यानां कर्णवेधेन बन्ध्यत्वं नश्यति। अवगतम्।

(नापितं विलोक्य) किं कर्णवेधः सम्पन्नः ?

गुरुः – अस्तु, अथेदानीं बालकस्य अक्षरारम्भः करणीयः।

सर्वे – 1. किमेतत् भगवन् ! एवमक्षरारम्भः कदा भवति वा ?

2. अक्षरारम्भस्तु पंचवर्षीय-बालस्य एव भवति।

3. सर्वं किम् अस्य बालस्य करिष्यसि !

4. नहि नहि भगवन्। यदा एव बालः पञ्चवर्षीयः भविष्यति, तदा पुनः वयम् आगमिष्यामः।

गुरुः – किं तावत्कालं /पंचवर्षाणि दर्शकाः अत्र स्थास्यन्ति ? तिष्ठत, तिष्ठत (कथम् – सर्वान् अवरुणद्धि)

किम् – गुरो ! एताः महिलाः सम्यक् कथयन्ति।

गुरुः – एवम् ? किम् रे त्वया किमपि पठितं वा ?

किम् – आम्। श्रीमन्।

गुरुः- कियत्

कथम् – मध्याह्नं यावत्।

गुरुः – त्वया कियत् पठितम्।

किम् – अहम् अहम् / नहि नहि, अहं किमपि न भविष्यामि। आदौ अहं भ्रूणः अभवम्।
इदानीं मम अक्षरारम्भम् अपि करिष्यसि। नहि नहि अहं किमपि न करिष्यामि।
अहं तु पञ्चविंशति-वर्षीयः अस्मि।

गुरुः – पञ्चविंशतिवर्षीये जातेऽपि तव बुद्धिस्तु पञ्चवर्षीया एव अस्ति।
(ओले .. ओले.. ...)
प्रभो! अस्य शिशोः किं करणीयम्।

(सर्वाः तम् परिवारयन्ति)

अक्षरारम्भ-संस्कारः / पूजनम्/.....

श्रीगणेशाय नमः, श्रीसरस्वत्यै नमः, श्रीकुलदेवतायै नमः, श्रीगुरुभ्योः नमः, श्रीवासुदेवाय नमः। ओम नमः सिद्धम्।

गुरुः- अथ अग्रिमः संस्कारः।

किम् – उपनयनम्।

गुरुः – (विलोक्य) उपनयनम् अर्थात्

किम् – गुरोः समीपे नयनम्।

उपनयन-दृश्यम्

(गीतम्) नवग्रहाणां देवानां नामसु सूत्रबन्धनम्

वस्त्रधारणम्/पादप्रक्षालनम्/पन्त्रोच्चारणम्/यज्ञोपवीतधारणम् /गायत्रीमन्त्रः/भिक्षाटनम् भवति! भिक्षां देहि)

(वेदारम्भः, दृश्यम् – 'अइउण्' – गीतम्)

सहस्रशीर्षा पुरुषः.....

प्रश्नः – को नाम वेदः ?

उत्तरम् – इष्टप्राप्ति-अनिष्टपरिहारयोः यो अलौकिकमुपायं वेदयति स वेदः। अपौरुषेयं वाक्यं वेदः।

प्रश्नः 2 कति वेदाङ्गानि, भगवन् !

उत्तरम् - शिक्षा-कल्प-निरुक्त-व्याकरण-छन्दो-ज्योतिषानि इति षड् वेदांगानि।

प्रश्न -3 श्रीमन्! को नाम संस्कारः ?

उत्तरम्- सम्यक् आचारः संस्कारः ।

जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद् द्विज उच्यते । मानवजीवननिर्माणे संस्कार एव गरीयान्।

प्रश्न-4 भगवन् ! किं नाम सुखम् ? किं नाम दुःखम् ?

उत्तरम् – अनुकूलवेदनीयं सुखम् । प्रतिकूलवेदनीयं दुःखम् ।

प्रश्न-5 भगवन्! वेदारम्भानन्तरं कतमः संस्कारः क्रियते ?

उत्तरम् वत्स! द्वादश वर्षाणि वेदाध्ययनं भवति । सांप्रतिके युगे स्नातकोत्तरम् अर्थात् P.G. कक्षां यावत् सामान्यतः अध्ययनं भवति । ततः केशान्तसंस्कारः विधीयते । अनन्तरं च समावर्तनं क्रियते ।

(केशान्तः/ समावर्तनं –दृश्यम् /शिक्षोपनिषद् /शिक्षावल्ली –

वेदमनूच्यार्योन्तेवासिनमनुशास्ति। सत्यं वद । धर्मं चर। स्वाध्यायान्मा प्रमदः। आचार्याय प्रियं धनमाहृत्य प्रजातन्तु मा व्यवच्छेत्सीः। सत्यान्न प्रमदितव्यम्। धर्मान्न प्रमादितव्यम्। कुशलान्न प्रमदितव्यम्। भूत्यै न प्रमदितव्यम्। स्वाध्याय-प्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्। देवपितृकार्याभ्यां न प्रमदितव्यम्। मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव। अतिथिदेवो भव। यान्यनवद्यानि कर्माणि तानि सेवितव्यानि। नो इतराणि। यान्यस्माकं सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि।।)

गुरुः – वत्स ! इदानीं त्वं गृहस्थाश्रमे प्रवेष्टुं समर्थोऽसि । तत्र कापि वर्तते वा तव जिज्ञासा ?

शिष्यः – भगवन् ! किं नाम गृहस्थस्य परमं कर्तव्यम् ?

गुरुः – सानन्दं सदनं सुताश्च सुधियः, कान्ता न दुर्भाषिणी
सन्मित्रं सुधनं स्वयोषिति रतिश्चाज्ञापराः सेवकाः ।
आतिथ्यं शिवपूजनं प्रतिदिनं मिष्टान्नपानं गृहे,
साधोः सङ्गमुपासते हि सततं धन्यो गृहस्थाश्रमः ॥

(विवाह –दृश्यम्)

(गीतम् – सोणा वटणा / चटर मटर .....)

(वरागमनम् / स्वागतम् / द्वारपूजनम् /मधुपर्कः / कन्याप्रवेशः /कन्यादर्शनम् /कन्यादानम् /पाणिग्रहणम्/संकल्पादिकम्....

गुरुः – कन्याभ्रातरम् आह्वयत जलदानार्थम् ।

सखी – भ्रातः, भ्रातः – सुन्दर, कालू, लखन.....

गुरुः – अरे ! अरे दर्शकाः, न खलु कन्यायाः भ्राता ।

सखी – भ्राता कुतः आनेतव्यः?

गुरुः – अत्र कुशीलवाः सन्ति । तन्मध्यादेव भ्राता करणीयः ।

किम् – अरे कथम् ?

कथम् – आम्, भ्रातः!

सखी – भ्रातः / एष एव भ्राता भवेत् ।

कथम् – अहं न करिष्यामि। अहं सङ्गीतं करोमि। वादयामि। अस्य वृद्धस्य ताडनमपि सहे। अहं भ्राता न भविष्यामि।

गुरुः – अरे वत्स ! कन्यादानं महापुण्यम्। पुण्यभाजाम् एव एतत् सौभाग्यं भवति।

कथम् – एवं वा ? किं नाम कन्यादानम् ?

गुरुः – शृणु.....।

कथम् – एवं न। लयेन श्रावय।

गुरुः- (ससङ्गीतम्) – त्रीणि दानानि लोकेऽस्मिन् प्र.....

(गीतम्/ पादपूजनम् /पाणिग्रहणम् / हस्तरञ्जना /ग्रन्थिबन्धनम्, लाजाहोमः)

गुरुः – उत्तिष्ठ ! अग्नेः प्रदक्षिणां कुरु। धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष-निमित्तं परिक्रमाचतुष्टयं विधेहि। परिक्रमात्रये पत्नी अग्रे ब्रजेत्। चतुर्थे परिक्रमणे तु पतिः अग्रे तिष्ठेत्, अन्ये च सप्तपदीं गायन्तु।

सप्तपदी – 1. तीर्थव्रतो.....

2. मदीयचिन्तानुगत.....
3. न सेवनीया.....

(गीतम् – श्री रघुवर कोमल ..... (विदाई दृश्यम् / गीत – साडा चिडिया .....

कथम्- अलम् अलम् अतिविस्तरेण। एवमेव सङ्गीतं चलिष्यति। मम समावर्तन–संस्कारेण किं साक्षात् मृत्युरेव भविष्यति।

गुरुः – किं रे ब्रह्मचारिन्। किम् अभवत्।

कथम् – प्रभो ! ममापि विवाह-संस्कारं विदधातु।

गुरुः – वत्स ! नेदानीम्, त्वं विवाहयोग्यो न भवसि।

(शिष्यः किम् – (शरीरं पश्यति)

गुरुः – अर्थात् तव बुद्धिः तथा योग्या नास्ति।

कथम् – एवम्। पृच्छतु भवान्, किम् प्रष्टव्यम्।

गुरुः – ब्रूहि, को नाम मृत्युः।

कथम् – (सस्वरम्) वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नवोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-न्यन्यानि संयाति नवानि देही।।

गुरुः – एवम्! शोभनम्।

शिष्यः – अथ कारय मम विवाहसंस्कारम्।

गुरुः – अरे, इदानीमपि एकः संस्कारः अवशिष्यते अभिनेतुम्।

शिष्यः – (साश्चर्यम्) मृत्युः, तदपि अधिमञ्चम्। दर्शकाः प्रेक्षिष्यन्ते। (शिव, शिव, शिव)

गुरुः – वत्स! जीवनं चक्रवत् परिवर्तते।

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः ध्रुवं जन्म मृतस्य च। तथापि मोक्षप्राप्तिरेव जीवनस्य परमं प्रयोजनम्।

तथापि इदमस्तु भरतवाक्यम् –

लब्ध्वा संस्कार-शुद्धिं प्रशमितकलुषाः सन्तु लोके मनुष्या
नाशं यान्तु प्रबुद्धा निखिलरिपुगणा मानसे जायमानाः।

सुस्निग्धाः सन्तु लोकाः सकलजनमनोनन्दिनो धर्मनिष्ठाः
स्वाधीना क्लेशहीना भवतु वसुमती सर्वसंस्कारयुक्ता।।

0-0-0